सुबह के बादल

फेंग-शुएह-फेंग

अनुवादक

ग़रनवी अब्बासी

नवयुग प्रकाशन

दिल्ली

१९५६

मूल्य :—[illegible] रुपया आठ आना

नवयुग प्रकाशन बावड़ी बाजार, दिल्ली, द्वारा
प्रकाशित तथा रामा कृष्णा प्रेस कटरा नील,
चाँदनी चौक दिल्ली में मुद्रित

अनुक्रमणिका

विषय पृष्ठ

१. जीवन और विकास

एक बार एक कुआँ जो एक नदी के पास ही था उसकी नुक्ताचीनी किया करता था।

"सारी कीचड़ में लथपथ है, है इतनी दूर कि कोई छू भी न सके। दिन भर चपर-चपर करती रहती है और बस बहे जाती है—यह भी कोई जिन्दगी है? तुम्हें तो चाहिये कि मुझ जैसी गहरी और सहिष्णु बनो और धूल को अपने पास फटकने तक न दो। सारा दिन मैं अपनी छोटी-सी खिड़की में से नीले आकाश को तकता रहता हूँ और सृष्टि के रहस्यों का पता लगाता हूँ—और यही एक सफल जीवन बिताने का ढंग है।"

एक दिन कीचड़ से लथपथ नदी उमड़ी और ऐसी बिफरी कि एक जोर की गरज के साथ अपने किनारों को लपेट में लेती हुई आस-पास के देहाती प्रदेश को बहा ले गई और उसी के साथ कुएँ के लकड़ी के जंगले का भी सफाया हो गया। कुआँ बाढ़ में डूब गया और उसके साथ ही उसका गहरा सहिष्णु-जीवन भी पानी में गर्क हो गया।

२. सुबह के बादल

बहुत दिन हुये कहा जाता है कि समुद्र में एक मत्स्यांगना रहती थी। प्रति दिन, सूर्योदय से बहुत पहले वह एक द्वीप पर चढ़ जाती और एक चट्टान पर बैठ कर सूर्योदय की बाट जोहती। किन्तु उसकी बड़ी बहन ने सोचा कि वह इतने सवेरे जाकर अपना बहुत-सा समय नष्ट करती है। अतः वह हर बार पानी से अपना सिर बाहर निकालती और दूर ही से अपनी छोटी बहन को डाँटती-फटकारती।

"ओ री आलसन ! समय बड़ा कीमती है। क्या उसके निकलने के पहले तुझे और कोई काम नहीं ? तेरे दोनों हाथ सदा बेकार रहते हैं......"

इसलिये मत्स्यांगना ने इधर-उधर से बादल और कुहरा अपने समीप समेटा और द्वीप पर बैठकर ऐसी मेहनत के साथ बुनने में लग गई जैसे घर बैठी बुन रही हो। शीघ्र ही सूर्य उदय हुआ तो पहला काम उसने यह किया कि अपनी किरणों से समुद्र की जांच की। और जब बादलों का महीन जाल जो मत्स्यांगना ने बुना था सूर्य की किरणों से फटा तो वही जाल इन्द्रधनुष के रंगों वाला एक चमकीला बादल बन गया।

शानदार उद्देश्य के लिये किया गया सारा कार्य और सारा श्रम सुन्दर होता है।

एक ऐसा प्राणी जिसका सिर व धड़ स्त्री जैसा और दुम मछली की सी होती है।

३. कला और न्याय

एक साँप ने अपने बिल से सिर निकाला और एक तीतर को जो भोजन तलाश कर रहा था, मार डाला। जब तीतर की साथिन तीतरी को अपने पति की बेवक्त मौत की खबर मिली तो उसे रंज के साथ-साथ बड़ा क्रोध भी आया। अब तो उसने ऐसे ज़ोर-ज़ोर से रो-रोकर शोक मनाया कि सुनकर कलेजा मुँह को आने लगा। उसके रोने-धोने और मातम से हरे-भरे जंगल पर एक अंधकार-सा छा गया और वह भी चुप और उदास हो गया।

एक प्रतिभाशाली संगीतज्ञ ने जो वहां से गुजर रहा था बड़े ध्यान से यह रोना सुना और उसका हृदय पिघल गया। उसने कहा, "आह! इस करुण रोदन से आत्मा को कितना दुख होता है यह केवल आवाज ही बता सकती है।"

फिर संगीतज्ञ ने एक धुन बनाई और अपने बाजे द्वारा बहुत सख्त गुस्सा दिखाया। जिस किसी ने भी यह धुन सुनी–चाहे कड़कड़ाती सर्द सुबह के समय, शान्त रात्रि में या आनन्दित दिन के समय—उसका खून खौलने लगा और हृदय धड़कने लगा। उसके बाद हरेक उस साँप की तलाश में निकल पड़े। और जो भी साँप उन्हें मिला उन्होंने उसे पीटा चाहे उसने तीतर को मारा हो या नहीं।

कला न्याय के लिये है। यह मनुष्यों को दुराचार के दंड देने के लिए उकसाती है।

४. मित्र और शत्रु

एक दिन एक किसान गेहूँ काटने अपने खेत पर गया। गुरैयों का एक दल गेहूँ की बालियों पर उतरा और किसान से बोला : "ओ प्यारे किसान हम यह नहीं भूले हैं कि तुमने अपने खून पसीने से किस तरह हमें भोजन दिया है। अब इस सुहानी गरमी के आरम्भ में जो कि किसानों की सबसे ज्यादा काम की ऋतु है हम एक विशेष गीत गाकर तुम्हारा एहसान चुकाने आये हैं। हम तुम्हारे मित्र हैं!" यह कह चुकने के बाद वे सब मिलकर चहचहाने लगीं और साथ ही अपने मुँह गेहूँ से फुर्ती के साथ भरने लगीं।

क्रुद्ध किसान ने उन्हें भगाने के लिये मिट्टी के ढेले उन पर फेंके और गुस्से में कहा, "वाह! बदमाशों का टोला एक तरफ तो हमारा शोषण करता है ऊपर से कहता है हम उनकी सहायता करते हैं। समझते हैं मुझे अपनी संस्कृति से इतना लगाव है कि एक गुरैया का गीत सुनने के लिये मैं उसकी चोंच भर के गेहूँ खिला दूँगा! मुझे ऐसे मित्रों की कोई आवश्यकता नहीं है, मैं इन कवियों को अभी रवाना करता हूँ।"

जब गौरैयें उड़ गईं तो कुछ अबाबीलें गेहूँ के खेत में से कीड़े-मकोड़े पकड़ने के लिये उतर आईं। कहीं उन्हें घोंघा दीखा तो कहीं झींगुर और उन्होंने सब को चट कर लिया। तुरन्त ही वे फिर आकाश की ओर अपना सुन्दर गाना गाती हुई और सबको आनन्दित करते हुये उड़ गईं। यहाँ तक कि

किसान ने भी क्षण भर के लिये अपना सिर उठाया और आकाश की ओर देखा फिर वह अपनी कटाई में लग गया और सन्तुष्ट हो अपने आपसे कहने लगा।

"लोग ठीक ही कहते हैं, अबाबीलें वास्तव में अच्छे पक्षी हैं। न सिर्फ उन पर कुछ खर्च करना पड़ता है बल्कि वे तो हमारी फसल के कीड़ों को नष्ट करके हमारी सहायता करती हैं। और फिर वे आकाश में उड़ जाती हैं और इतनी ऊँची उड़ जाती हैं कि सुखद लगती हैं लेकिन वे कोई शेखी नहीं बघारतीं। उन्हें देख कर आँखों को आनन्द मिलता है। और वे इतनी मधुरता और स्पष्टता से गाती हैं कि ऐसा लगता है मानो यह नीला आकाश उनके गीत से जीवित हो उठा है। आह, इस प्रकार के कवि ही जनता के सच्चे मित्र होते हैं।"

५. आलस और साहस

एक चिड़िया आकाश में उड़ रही थी। उसने अपने आप से विश्वास के साथ कहा, "मैं उस सफेद बादल को अपना लक्ष्य बनाऊँगी और उसे पकड़ लूँगी।"

अपने पंख चोंच से सँवार कर उसने भरपूर शक्ति से ऊपर उड़ने की कोशिश की। किन्तु सफेद बादल कभी पूर्व में तो कभी पश्चिम में अंधाधुंध तैरने लगा। कभी वह अचानाक रुक जाता और वहीं चक्कर काटने लगता जैसे कोई घमण्डी बिल्ली मक्खियाँ पकड़ने के लिये बार-बार चक्कर काटती है। फिर अचानक किसी घमण्डी आलसी स्त्री जो रेशमी कपड़ों में लिपटी हुई स्त्री की भाँति वह धीरे-धीरे छूटना शुरु कर देता और अपना आलसी शरीर सीधा करता। बल्कि इससे भी बढ़कर वह यह करता कि अचानक छूटकर आँखों से बिल्कुल ओझल हो जाता।

फिर चिड़िया ने दृढ़ता से कहा, "नहीं, यह नहीं चलेगा! मुझे तो वे पहाड़ की ऊँची चोटियाँ अपना लक्ष्य बनाना चाहिये। ऊँचे पहाड़ इतने अटल और इतने सबल हैं, इतने महान सुन्दर हैं कि मैं उनसे शक्ति और साहस प्राप्त कर सकती हूँ। और उनके ऊपर से उड़ते हुये मुझे बहुत खुशी होती है क्योंकि जैसे-जैसे मैं एक चोटी से दूसरी चोटी पर जाती हूँ मुझे ऐसा लगता है जैसे मैं एक राक्षस के सिर से दूसरे के सिर पर चल रही हूँ।"

इतिहास के ऐसे मजबूत और साफ मार्ग पर चलकर जनता के सच्चे शानदार उद्देश्य को आगे बढ़ाओ।

६. व्यक्ति और समूह

एक बढ़ई किसी इमारत के लिए एक उम्दा किस्म का बड़ा पेड़ ढूँढने के लिये जंगल को गया। लेकिन बेचारे ने सारा जंगल छान मारा और कहीं उसे मतलब का पेड़ न मिला।

उसने कहा, "ये तो सब के सब एक ही ऊँचाई के हैं। इनमें एक भी तो ऐसा नहीं जो बाकियों से बड़ा हो।" निराशा में डूबा ग़रीब वापस आने को ही था कि अचानक उसकी नजर जंगल के आखिरी सिरे पर खड़े एक दरख्त पर पड़ी जो उसके मतलब का था। वह खुशी से फूला न समाया, "आहा! यह है जिसकी मैं घण्टों से तलाश में था। इसकी बराबरी का तो पेड़ सारे जंगल भर में नहीं दीखता!"

लेकिन दरख्त ने उत्तर दिया, "नहीं भई, यहीं तो तुम ग़लती करते हो। शायद तुमने भी उन गंदे लोगों की किताबें पढ़ी हैं जो कहते हैं कि हमारी कोई वास्तविकता नहीं है यह सही है कि मैं बाकी दरख्तों के बिल्कुल पीछे हूँ पर हूँ उन सबमें का ही। समूह में मिलकर तो हम सब एक जूट हैं लेकिन वैसे अलग रहकर मैं बड़ी से बड़ी इमारत को अकेला काफी हूँ। अब अगर तुम यह समझो कि इसमें कोई विशेषता नहीं तो हममें से किसी में भी विशेषता नहीं और यदि तुम समझो कि यह बाल मार्के की है तो हममें से हरेक और हम सब बड़े मार्के के हैं।"

७. सवेरा

रोजाना पौ फटते ही जंगल के तमाम छोटे-छोटे पक्षी चरचराने लगते और वृक्षों की चोटियों पर पहुँच कर कूद-फाँद मचाने लगते फिर कुछ पक्ष गीत पर गीत गाते और ऊपर आकाश में उड़ जाते। मानो सब एक दूसरे से कह रहे हों कि सूरज जरा देर में निकलने वाला है और पल भर में सवेरा हो जायगा। और सवेरा कितना प्यारा होता है !

लेकिन एक गिलहरी जो रात भर एक चितकबरे साँप के साथ जुआ खेलती रही थी और अब गहरी नींद सो रही थी पक्षियों की चहचहाहट से जाग उठी और उन्हें फटकारने लगी :—

"ओ री पंख वालियों जाओ अपने बिलों में ! सवेरा सवेरा लगा रखा है—हर रोज सवेरा होता है। उसे देख-देख कर और उसके बारे में बातें करते-करते तुम थकती नहीं ?"

पक्षी अपनी चीख-पुकार में ऐसे व्यस्त थे कि उन्हें कुछ सुनाई ही नहीं दिया। लेकिन एक पेड़ ने जो यह सब उलाहना सुन रहा था बड़े गुस्से से कहा :

"देखो दोस्त, दूसरी बातों को जाने दो लेकिन सवेरे के बारे में अगर तुमने कोई बुरी बात की तो मैं उसे सहन नहीं कर सकता। तुम्हारा मतलब है लोग सवेरे से भी ऊब सकते हैं ?"

"बिल्कुल सच कहा," एक घिसी-पिटी चट्टान बोली

"विद्वान लोगों ने जो मुझे बताया है उसके अनुसार मैं ५ लाख वर्ष की हूँ लेकिन वास्तव में सवेरे से मैं कभी नहीं थकी ।"

"यह असलियत है । सवेरा सदा नया होता है ।" एक मेंढक तालाब में से बोला ।

एक कीड़ा चक्कर खाता हुआ आया और हाँपते हुये बोला, "कौन कहता है सवेरा पुराना हो गया है ? क्या इस बदमाश गिलहरी ने कहा है ? मैं तो भई कभी ऐसा नहीं कह सकता ! ऐसा विचार मेरे दिमाग़ में तो आज तक आया नहीं !"

एक दम आकाश हल्के मुर्झाये हुये गुलाब में बदल गया और पृथ्वी का रंग हल्का हरा हो गया । सारी आवाजें फिर आने लगीं और सूर्य तक गर्म लोहे की मिट्टी की शक्ल में जालदार बादलों में ढका हुआ निकल आया । सारी आँखें उसकी ओर लग गईं और सूर्य ने एकदम अपना जाल उतार फेंका और इस प्रकार से अपना नटखट मुख दिखाया जैसे किसी को चिढ़ा रहा हो—जैसे खासकर उस चहचहाती हुई चिड़ियों को चिढ़ा रहा हो । फिर वे जोर से हँस पड़े और चिड़ियाँ अपना कोरस और जोर से गाती हुई आकाश की दिशाओं में उड़ने लगीं ।

यहाँ तक कि वह बदमाश गिलहरी भी उठ गई और आंखें मलते हुए कहने लगी :

"आज तो बड़ा सुहावना दिन निकला है !"

८. जिन्दगी मुस्करायेगी

एक था बाज़। वह मरुस्थल में रहता था जहाँ न फौवारे थे न जंगल। चुनांचे वह आकाश में खूब ऊपर तक उड़ गया ताकि अपना इच्छित दृश्य देख सके। पूर्व में तो उसे असीम महासागर दूर-दूर तक फैला हुआ नजर आया, उत्तर में खूब घना जंगल था जो सैकड़ों मील तक फैला हुआ था। पश्चिम में मनमोहक रंग बदलते हुये बादल छाये हुये थे जो घड़ी में उड़ते, घड़ी में नाचते और दक्षिण में हरा भरा मैदान था जो मखमल की तरह चिकना था।

अब बाज़ पानी के लिए पूर्व की ओर उड़ा। फासला कोई तीन हज़ार मील का था और शाम को रेगिस्तान लौटने के लिए जहाँ वह रात बिताना चाहता था उसे उतने ही मील और तै करने थे। टहनियां तोड़ने के लिए वह उत्तर में स्थित जंगल को गया। वहाँ भी वही छः हज़ार मील का सफर उसे तै करना पड़ा क्योंकि रात तो वह रेगिस्तान में आकर बिताना चाहता था और जब कभी उत्तर या दक्षिण में गया उसे आने जाने में छः हज़ार मील की दूरी तै करनी पड़ी।

इस दूर-दराज़ की यात्रा बाज के लिए थका देने वाली और ध्वस्त रखने वाली साबित हुई कि पूर्वीय महासागर ने उससे कहा "ऐसी भी क्या जान तोड़ते हो ? जरा थोड़ी देर और मेरे ऊपर घूमो-फिरो, मेरा राज्य देखो और यहाँ के दृश्यों को देखो। मेरा राज्य कुछ छोटा नहीं है। मुझ में बड़े असाधारण द्वीप हैं बड़े अपूर्व और अनोखे अजगर मछलियाँ और समुद्री

पक्षी मेरे अन्दर रहते हैं। क्या तुम्हें तूफान पसन्द है? तो जरा ठहरो अभी जरा देर में उठेगा और तुम उसे देखकर पुलकित हो उठोगे। और अँधेरा हो जाने पर तुम समुद्र के जिस गार में भी चाहो आराम कर सकते हो।"

लेकिन बाज ने जवाब दिया : "नमस्कार ! मैं कल वापस आऊँगा।" पानी लेकर कुछ देर वह समुद्र पर उड़ा और फिर वापस चला गया।"

उत्तरी जंगल ने भी उससे प्रार्थना की : "ज़रा कुछ देर और ठहर जाओ दोस्त ! शाम हो रही है, मेरा ख्याल है रात को तुम यहीं सो जाना। मेरा यह जंगल पसंद भी आया तुम्हें? इसकी सबसे बड़ी खूबी यह है कि आदि ज़माने से लेकर आज तक कोई भी मेरी सीमा के आखीर तक नहीं पहुंचा है। बहुत बड़ा राज्य है यह ! यहाँ के लोग बड़े ईमानदार हैं और भलमनसाहत से जीवन बिताते हैं। उनकी बस एक ही विशेषता है कि पुरुष नाच पसंद करते हैं और स्त्रियों को सङ्गीत प्रिय है। यदि तुम उनसे मिलना चाहो तो मैं रीछ और बुलबुल से परिचित करा सकता हूँ। मेरी तो हार्दिक इच्छा यह है कि तुम यहाँ कुछ दिन के लिए ठहर जाते। यहाँ तुम बेहतरीन रात गुजार सकते हो जैसे ही तुम आँखें बन्द करोगे तुम्हें स्वप्न में जंगल का 'अनन्त स्वप्न' दिखाई देगा—चाहे वह गर्मी की गहरी हरियाली हो या सर्दी का सफेद बर्फ—लेकिन वह सब होगा अनन्त ही..."

लेकिन बाज़ ने पहले की तरह जवाब दिया : "नमस्ते !

में कल आऊँगा !" फिर उसने अपनी चोंच से एक टहनी तोड़ी, जंगल का एक चक्कर काटा और सीधा वापस आ गया।

पश्चिम के फले फूले चमकीले बादलों ने बाज को लुभाने की पूरी कोशिश की और कहा, कुछ देर मेरे साथ नाचो ना ! आओ हम इसी तरह नाचे जाते हैं और नाचते-नाचते पश्चिमी आकाश में उड़ जाते हैं और फिर वहां से कभी नीचे नहीं आयेंगे। आह, तुम्हारे साथ रहने में कितना सुख मिलता है !"

लेकिन बाज व्यस्त यात्रियों की भाँति कुछ देर तक उन चमकीले बादलों के साथ पश्चिमी आकाश में उड़ता रहा और फिर बोला: "नमस्ते तुम कितने सुन्दर लगते हो ?"

दक्षिण की हरी-भरी धरती ने अपने आपको ऐसा सजाया कि वह बसंत की प्रतिमा दिखाई देने लगी। उसने बाज से कहा : "तुम ऐसी जल्दी में सिर पर चक्कर लगाकर क्यों उड़ जाते हो ? नीचे आओ हम जरा इस बात पर बहस करेंगे कि धूप, मेहनत और प्रेम जिन्दगी को दुबला करते हैं या......"

बाज ने कहा, "हाँ, मैं बसन्त ऋतु को जानता हूँ। लेकिन नमस्ते, मैं फिर कभी आऊँगा।"

रात को बाज अपने रेगिस्तानी घोंसले में आकर ही सोया। बहुधा ऐसा होता कि दिन के जोशीले कामों और अनुभवों को याद करके उसे घण्टों नींद नहीं आती। ऐसे समय वह अपने आपसे कहता, "मैं तो अब वास्तव में बहुत बड़ा

आदमी बन गया हूँ, दिन भर न काम न काज और मैं हूँ सांस लेने की फुर्सत नहीं मिलती फिर भी मुझे उत्तर, दक्षिण, पूर्व और पश्चिम सभी से समान प्रेम है। वे सब कितने सुन्दर हैं! लेकिन रेगिस्तान की रातों का स्वाद मैं नहीं छोड़ सकता और दिन में ऊपर उड़ने और चक्कर खाने में जो मज़ा आता है उसे छोड़ देना भी असम्भव है। सत्य तो यह है कि मैं समुद्र से पानी, जंगल से टहनियाँ, पश्चिम से बादल और दक्षिण का बसंत को इस मरुस्थल में लाना चाहता हूँ। उस तरह मैं और भी व्यस्त रहूँगा। लेकिन कुछ ही क्यों न हो जाय यह तो मुझे हर कीमत पर करना ही है और मुझे विश्वास है मैं अपनी योजना पूरी कर लूँगा। वह दिन दूर नहीं जब मेरे रेगिस्तान में फौवारे भी होंगे और जंगल भी। मेरा यह लक्ष्य चाहे एक सुपना ही-सा क्यों न लगे फिर भी यह है असली और मुझे तो इसका विचार-मात्र ही आनन्दित कर देता है।

अब तो बाज ने आगे-पीछे उड़ना जारी कर दिया और उसने इसे कभी कष्ट कर न समझा।

६. प्रेम और जीवन

एक था शिकारी—बड़ा बहादुर और भला मानुस। उसकी पत्नी दूसरों के सामने उसकी तारीफों के पुल बाँधती रहती : "मेरा पति भैया बड़ा अच्छा है ! हम दोनों की खूब निभती है। जब कभी भी वह बाहर निकलता है इतने प्यार से पेश आता है जब वापस आता है तब भी प्यार बिखेरता हुआ आता है, मैं तो उस पर लट्टू हूँ !"

लेकिन एक दिन शिकारी बाहर गया तो आधी रात तक न लौटा। और न ही उसने अपनी पत्नी को कोई सन्देशा भेजा। असल में यही उसका सौभाग्य था कि वह जिन्दा लौट आया क्योंकि उसकी एक भयानक पशु से मुठभेड़ हो गई थी और वह बड़ी देर उससे टक्कर लेने के बाद वहां से भाग सका था। उसके बाद से वह बहुत उदास रहने लगा और पत्नी से प्रेम करना छोड़ दिया। ऐसा हो गया जैसे उसे अपनी पत्नी से कोई सरोकार नहीं है। उसकी पत्नी उससे बड़ी नजाकत्त से पेश आती और उससे प्रेम की भीख मांगती पर असफल रहती। फिर फूट फूट-कर रोने लगी और बेहोश हो गई। लेकिन इस पर भी शिकारी का दिल न पसीजा। कुछ दिनों बाद वह भी खामोश, उदास और लापरवाह हो गई।

एक दिन शिकारी फिर बाहर गया और आधी रात तक न लौटा। पर जैसे ही वह उछलता हुआ दरवाजे में दाखिल हुआ कि उसने अपनी बीवी को पकड़ लिया और पागलों की तरह उसे खूब नचाया-घुमाया। यहाँ तक कि उसे चक्कर आने लगे

और वह गिर पड़ी। फिर भी वह नाचता रहा और खुशी में चिल्लाता रहा।

"ऐ बीवी, आ हम खुशी हों, सुख से रहें !......." वह इतने जोर से चीखा कि कमरा हिल गया। पड़ौसी दौड़े चले आये और ज्योंही वे आँगन में दाखिल हुये उन्होंने एक हिंस्र जन्तु की लाश देखी जो वह उठा कर घर ले आया था।

जाहिर है हम सभी जीवन में सुख और आनन्द चाहते हैं। और मेहनत कश लोग दूसरे प्राणियों की अपेक्षा अधिक सुख और प्रेम नहीं चाहते ? और लोगों की उदासी क्रूर, निर्दय और स्वेच्छाचारी शासन ही का परिणाम नहीं है ? लेकिन उदास लोग जिंदगी में केवल परिश्रम नहीं करते बल्कि जिन्दगी में संघर्ष भी करते हैं यहाँ तक कि उनकी विजय सिद्ध कर देती है कि आनन्द व प्रेम जीवन से अभिन्न हैं और जनता भी उससे भिन्न नहीं है।

१०. जीवन और सूर्य

एक दिन सूर्य जो अस्त हो रहा था सहसा रुका और उसने फिर कर रेगिस्तान को देखा और अपनी प्रज्वलित किरणों से रेगिस्तान को ऐसा रंग दिया कि वह रक्त-सागर दिखाई देने लगा। एक शेर जो वहाँ शांति पूर्वक घूम रहा था उसने महसूस किया कि यह सुन्दर दृश्य फिर कभी न आयेगा और उसे एक ऐसी अवर्णनीय आकाँक्षा ने घेर लिया और उसने दुखित हो कहा : "आह अब मैं समझा यह वह चमकदार गोला है जिसने मेरे राज्य को इतना जगमगा दिया है। लेकिन क्षण भर में यह सब अदृश्य हो जायगा, हाँ अगर मैं रेगिस्तान का राजा—इसे दबोच कर वापस न ले आऊँ।"

फिर तो शेर की धमनियों में खून तेजी से दौड़ने लगा और बिजली की-सी तेजी के साथ पश्चिम की ओर भागा और उसके पीछे लाल धूल के बादल उठने लगे। लेकिन जितना आगे वह दौड़ता गया सूर्य उतना ही पीछे हटता गया और रेगिस्तान लाल रंग से हल्के सफेद रंग में बदल गया। फिर भी, अब शेर एक झील पर पहुँचा—वह उन झीलों में से एक थी जो रेगिस्तान के मोती कहलाती हैं क्योंकि वे बड़ी साफ और आकर्षक होती हैं। आकाश में अन्तिम गुलाबी बादल की छाया झील के नीले वक्ष पर लहरा रही थी। इसलिये शेर यहीं रुक गया और खुश हो बोला : आहा हा, मेरा शिकार तो यहां

मौजूद है !" एक छलांग में वह झील के अन्दर था और वहीं डूब कर वह अपनी मौत से जा मिला। लेकिन अपनी अन्तिम सांस छोड़ने के पहले उसने कहा: "इससे बेहतर मौत मुझे क्या नसीब होती कि मरीचिका के पीछे दौड़कर मैं खत्म हो रहा हूँ।"

११. शैतान की मौत

एक गाड़ी किसी सड़क पर जा रही थी। एक साँप ने सोचा कि उसे रोक दे। लेकिन चूँकि माल से भरी हुई गाड़ी को रोकना सरल नहीं था इसलिए उसने एक मेंढक से सहायता माँगी और कहा, "यह एक जबरदस्त टक्कर है और यों चुपचाप इसे करना संभव नहीं है इसलिए मुझे तुम जैसे मशहूर तबलची की आवश्यकता है।"

मेंढक तो यह सुन कर फूला न समाया। जब मालगाड़ी समीप आई तो उसने अपने आपको खूब फुला लिया और जितने जोर से टर्र-टर्र कर सकता था करने लगा। उसकी टर्र-टर्र से साँप को भी जोश आया और वह क्रोध में पागल होकर सड़क के बीचों-बीच गाड़ी रोकने के लिये लेट गया। दुर्भाग्य की बात कि गाड़ी आई और उस पर से गुजर गई, साँप वहीं पर ढेर हो गया। लेकिन मेंढक का इसका पता न चला और वह जोर के साथ टर्राता रहा।

यहाँ तक कि चिड़ियों का एक झुण्ड नीचे उतरा, उन्होंने साँप को खा डाला और रणभूमि को बिल्कुल साफ कर दिया लेकिन मेंढक था कि टर्राये जा रहा था और जितना ज्यादा वह टर्राता गया चिड़िया उतनी ही बेचैन होती गईं और उन्होंने कहा: "चलो इसे भी ठिकाने लगा दें, कैसा शोर मचाये जा रहा है यह।" इस

प्रकार मेढ़क को चिड़ियों ने जिन्दा खा लिया हालांकि वे उसे युद्ध अपराधी नहीं मानती थीं।

तमाम शैतानी कोलाहल और कविताएँ उन अत्याचारियों की भाँति समाप्त कर दी जानी चाहियें जो लोगों के अधिकारों को छीनने के लिए इस्तेमाल होती हैं।

१२. कायर की वीरता

एक लोमड़ी गाँव में घूमती-घूमती एक अच्छे खासे चौड़े गढ़े के पास आई। अपनी हुनरमंदी जाँचने के लिए उसने उस गढ़े को एक छलाँग में पार करना चाहा लेकिन वह अपने आपको जितनी हुनरमंद समझती थी असल में उससे आधी भी न थी। इसलिये जब वह कूदी तो गढ़े के बीच में गिर पड़ी और कीचड़ में गहरी धँस गई। उसने वहाँ से निकलने के लिए बहुत हाथ-पाँव मारे लेकिन असफल रही। अब उसने पूरी शक्ति से चिल्लाना शुरू किया और यह समझी कि उसका शोर सुनकर सारे पहाड़, जगल और आस पास की प्रत्येक चीज घबरा जायगी और उसे कीचड़ में से निकलने में मदद देगी। लेकिन वह चिल्लाती रही और किसी के कानों पर जूँ तक न रेंगी। पहाड़ और जंगल खामोशी के साथ उसे देखते रहे बल्कि कुछ मुस्कराते भी रहे। अब लोमड़ी को अक्ल आई और उसने सोचा कि वह चुप होकर पहले तो अपनी गलतियों को देखे। और फिर कहा, "मैं कुछ धीरे भी तुम्हें पुकार सकती हूँ लेकिन तुम कर क्या सकते हो ?" फिर भी कोई जवाब न मिला। आखिरकार लोमड़ी ने हाथ-पैर चलाना बंद कर दिये और अपने आपसे बोली, "कोई बात नहीं, मुझे यही तसल्ली है कि मैं वीरता के साथ कीचड़ में फँस गई।"

आप इस प्रकार के प्राणी से चाहे दोस्ती न करें लेकिन उसके हाल पर गौर करने में क्या हर्ज है। उसे जितनी बड़ी हार हुई वह उतने ही जोर से चीखी लेकिन आखिर में खुद चुप हो गई और अपने आपसे बातें करने लगी।

१३. शत्रुता का फल

एक था सूग्रर ! उसे ग्रपनी शक्ति पर इतना विश्वास था कि वह वह सबको मार डालना चाहता था। उसने सारे जंगल में ग्रंधा धुँध दौड़ना शुरू किया लेकिन वह था बड़ा ग्रभागा। पहले पेड़ को जो उसने टक्कर लगाई तो उसकी खाल छिल गई ग्रौर दूसरे ने उसका एक दाँत तोड़ दिया। ऐसी हालत में एक हट्टे-कट्टे ग्रादमी को सिवाय क्रोध के क्या ग्रा सकता था। चुनांचे क्रोधित सूग्रर ने ऐलान कर दिया कि सारा जंगल उसका शत्रु है। उसने एक-एक वृक्ष पर हमला किया—किसी को सिर से टक्कर देता, किसी पर ग्रपना वजन दे मारता, किसी को काटता तो किसी को लात से मारता। उसकी ग्राँखों से ग्राग के शोले भड़कते ग्रौर सारा जंगल उसके शोर से काँप उठता। ऐसा मालूम होता जैसे ग्रसल में कोई लड़ाई छिड़ गई हो। लेकिन उसे यह देखकर ग्रपार दुःख हुग्रा कि उसका सारा शरीर जख्मों से छलनी हो गया था ग्रौर वह बुरी तरह परास्त हो गया था। लेकिन ग्रपनी पराजय यों स्वीकार करने वाला वह न था। उसने निश्चय किया कि कम से कम एक वृक्ष की चोटी को जब तक वह न तोड़ फेंकेगा उसका गुस्सा शाँत न होगा। एक उड़ान में वह ऊपर को उछला लेकिन दुर्भाग्यवश पास के एक दरख्त ने ग्रपनी एक शाखा शरारतन उसके पेट में भोंक दी ग्रौर सूग्रर बेचारा

लटक गया हवा में। अब नीचे उतरना तो मुहाल था ही इसलिए वह लालटैन की तरह वहीं टगा रहा।

इसके बाद यह लड़ाकू सूअर वहाँ से फिर कभी नीचे न उतरा। सूअर के झगड़ालू स्वभाव के कारण सब उसके शत्रु बन गए और वह हार झक मारकर यों ही रह गया।

१४. खूनी की चालाकी

एक बार जब पहाड़ वर्फ से बुरी तरह ढँका हुआ था तो एक भेड़िया भूखे पेट घूम रहा था। भूखों रहना उसे पसन्द नहीं था इसलिये हालाँकि उसे किसानों की लाठियाँ और दूसरे कटु अनुभव याद थे फिर भी उसने साहस बटोरा और पहाड़ी से नीचे गाँव में जाकर एक मुर्गी पकड़ने का निश्चय किया। इस बार वह ऐसी तेज रफ्तार से भागा कि मार-पीट से बच गया। इसलिये बड़े खुशी-खुशी उसने वापस आकर अपने आप से कहा : "डरने की कोई बात नहीं ! मुझे कोई नहीं पकड़ेगा। अब तुम मुझे पकड़ोगे, ऐं ? हाँ, हाँ मैंने—भेड़िये ने यह सब किया है—मैंने ही दिन दहाड़े डाका मारा है ! यह हमेशा से मेरा पेशा रहा है !" अब भेड़िये ने सोचा कि वह सच्चा है इसलिए उसमें कुछ निडरता आ गई। वह बड़ी हिम्मत के साथ मुर्गी को मुँह मे दबाये पहाड़ पर चढ़ गया और बड़ा मजा लेकर उसने उसे खा लिया।

अचानक उसे एक खरगोश ने घेर लिया, उसने बर्फ पर खून की एक लकीर और अपने कदमों के निशान देखे। वह घबरा गया क्योंकि वह निशान उसके लिए कष्टकर और खतरे की सूचना थी।

"गुनाह के सबूत तो साफ दिखाई दे रहे हैं," उसने घबराते हुए कहा। "अगर कहीं उन्होंने मेरा पीछा किया तो मैं तो कोई बात भी नहीं बना पाऊँगा। सबसे अच्छी बात है मानो ही नहीं।"

यह सोचकर भेड़िया चिल्लाता हुआ घाटी की ओर दौड़ा। "इधर देखना जरा! इन लोगों ने मेरी इज्जत मिटाने के लिए अफवाह उड़ा रखी है।"

साथ ही उसने मुँह से खून की लकीर और कदमों के निशान मिटाना शुरू कर दिये। लेकिन जितना ज्यादा वह उनको मिटाता वे और ज्यादा चमकने लगते क्योंकि भेड़िये के जबड़े खून से लिथड़े हुए थे और उन्हें पोंछने का उसे समय ही न मिला था।

१५. बगुला भक्त

एक बार एक लोमड़ी ने अपने मुँह में एक बिगुल बांध लिया और दुम में एक जलती हुई लकड़ी लटका ली। जब उसने देख लिया कि वह सुरक्षित है तो वह एक खुले मैदान में जाकर दौड़ लगाने लगी और अपनी बिगुल में से चिल्लाने लगी, "आग लगी है, बचना भाई, बचना ! विद्रोहियों को आग मत लगाने दो !" और साथ ही वह जलती हुई लकड़ी से हरेक चीज को आग लगाती जा रही थी।

इस महान कारनामे को सुनकर दूर और नजदीक के देहाती दौड़े-दौड़े उस जगह आ पहुँचे और सबके सब भौंच-क्के देखने लगे। और जब लोमड़ी ने देखा कि वह अपने काम में सफल हो गई है तो वह बड़ी खुश हुई और लोगों को अपना यह सबक समझाने लगी:

"देशवासियो ! मेरे इस खेल का नाम है :
जहाँ कहीं शोर सुनो "आग को रोको"
वहीं आग फैल जाये।"

१६. अन्ध-विश्वास

एक दिन जब कुछ खरगोशों को जो एक पहाड़ी पर रहा करते थे ? यह खुशखबरी मिली कि भेड़ियों के पहाड़ का राजा उनसे मिलने आने वाला है तो वे खुशी से नाचने लगे। खरगोशों के लिये यह एक बहुत बड़े गर्व की बात थी।

वे अपने बिलों से निकल कर आये और आपस में खुशी के समाचार सुनाने लगे। उन्होंने राजा का ऐसा शाही स्वागत करने की तैयारियाँ कीं और ऐसा उत्सव मनाने का निश्चय किया जिसकी मिसाल पहले कभी न मिली हो। उन्होंने कहा, "यह एक ऐतिहासिक अवसर है जो हमारी संतान के लिये असीम सुख प्रदान करेगा।"

और आखिरकार भेड़िया राजा आ पहुँचा और खरगोश बूढ़ों को सहारा दिये, बच्चों को सम्भाले हुये रास्ते के दोनों ओर खड़े हो गये। वे उसे दुआएँ देते रहे और भावुकता में डूबे बड़ी जिज्ञासा से उसे घूरने लगे। भेड़िया राजा ने भी उन्हें झुक कर अभिवादन किया और उन्हें आश्वासन देते हुये एक घोषणा जारी की।

फिर भी जब सारी रस्में खतम हो चुकीं तो भेड़िया राजा ने ऐलान किया कि यह बड़ी अच्छी जगह है इसलिये वह वहां एक सफरीलॉज बनवा देगा। तुरन्त सारे खरगोश उस कार्य में जुट गये और अपने घर तोड़ फोड़ कर राजा की सेवा के लिये तैयार हो गये। और चूँकि भेड़िया राजा अपना बिस्तर या कपड़े नहीं लाया था इसलिये खरगोशों ने उसे बहुत सा

महीन रोवाँ जमा करके दिया और प्रार्थना की कि वह उसे स्वीकार करे। जाहिर है उसके पास खाने-पीने की भी कोई सामग्री न थी लेकिन सौभाग्यवश यहाँ हर साल खरगोश के माँस की बहुत सी मात्रा होती थी जो फौरन वहाँ लाकर रखी गई जिसके लिये उसे कोई पैसा खर्च न करना पड़ा और इस प्रकार आने-जाने का खर्च भी बच गया।

हालात बहुत जल्दी बदल गये। वे स्वागत के समय निकली हुई आवाजें और हर्षमय उद्‌गार अब दयापूर्ण करा·· हटों में बदल गये और सुख समृद्धि के बजाय वे बड़ी विपदा में फँस गये और भारी खतरा उनके सिर पर मँडराने लगा। यहाँ तक कि उनके सुयोग्य प्रतिनिधि भी न बच सके। लेकिन आखिर ये प्रतिनिधि थे तो असाधारणतया बुद्धिमान लोग इस लिये अपने लंबे कानों को झटका देखकर बड़े दुख के साथ उन्होंने कहा :—

"ऐसे चालाक लोगों से हमारी तरह पहले ही कुछ साव-धानी से क्यों नहीं काम लेते ?"

अत्याचारी और हमलाकर लोगों को जो सम्मान देते हैं, उससे जनता को केवल गरीबी और मुसीबतें मिलती हैं।

१७. खूब मदद की

एक बत्तक के बच्चे का उसके भाइयों से झगड़ा हो गया और उन्होंने उसे निकाल बाहर किया। वह घास पर पड़ा अकेला फूट-फूट कर रो रहा था कि अचानक उधर से एक नींवला गुजरा और उससे बोला :

"ऐ नन्हें, ऐसा फूट-फूट कर क्यों रो रहा है रे ? तू तो बिल्कुल राजकुमार लगता है। कहीं राजगद्दी हथियाने के सिल-सिले में तुझे दूसरों ने मार तो नहीं भगाया ?"

बत्तक के बच्चे ने सोचा नीवला कहता तो सच है, इस लिये उसने जवाब दिया। "आपने ठीक फरमाया साहब, मैं ही वास्तव में राजकुमार हूँ वे सब तो ढोंगी हैं लेकिन उन लोगों ने जनता के विद्रोह से फायदा उठाया और······।"

"मेरा अनुमान ठीक ही था ? तो तुम हारे हुए राजकुमार हो। भई, यह बड़े दुख की बात है। अच्छा तो तुम मेरे आगे-आगे चलो मैं विद्रोह को दबाने में तुम्हारी मदद करूँगा ताकि तुम जायज तौर पर राजा बन सको।"

बत्तक के बच्चे को तो ऐसी खुशी हुई जैसे वह वास्तव में राजकुमार हो। वह लड़खड़ाता हुआ नीवले के साथ चल दिया ताकि अपने भाइयों को दबाकर राज्य उनसे छीन ले।

लेकिन कुछ ही कदम चला होगा कि नीवले ने उसे झपट कर दबोच दिया। बत्तक का बच्चा परेशान हो चीखने लगा मानों कह रहा हो :

"ओह तुम तो साम्राज्यवादी हो, तुम नीवले हो।"

"तुम भी अच्छे मसखरे हो। अरे इतनी देर से मैं तुम्हें फुलसा रहा हूँ और तुम समझ ही न सके कि मैं कौन हूँ।" बत्तक के बच्चे को वह चबाने लगा और उसकी आवाज कुछ मध्यम पड़ गई।

१८. नाच न जाने आंगन टेढ़ा

एक खरगोश के पीछे लोमड़ी दौड़ी लेकिन खरगोश इतनी तेजी से भागा और अपना पीछा करने वाले के इर्द गिर्द उसने ऐसे चक्कर काटे कि लोमड़ी उसे न पकड़ सकी। जब लोमड़ी दौड़-दौड़ कर पसीने में शराबोर हो गई और उसका सिर चकराने लगा, उधर खरगोश एक कांटीली झाड़ी में जा छिपा और वहां जान-बूझ कर रुक गया और लोमड़ी को ललचाने गा। लोमड़ी उछली, उसे यह सूझा ही नहीं कि झाड़ी उसे काँटों में उलझा लेगी और वहाँ हवा में लटक जायगी और खूनाखून हो जायगी।

गुस्से से वह लाल-पीली हो गई और उसने खरगोश को जितनी गालियाँ वह जानती थी दीं : "अबे बदमाश कहीं के, काँटों पर इतना इतराता है! अबे खून के प्यासे अत्याचारी! अबे लुटेरे इन्सानों की मुसीबतों और विपदाओं से फायदा उठाता है! अबे नास्तिक……!"

खरगोश कभी का वहाँ से खिसक चुका था और अब बड़ी दूर जाकर उसने अपना मुँह फेरा और कहा, "और कुछ? तुम वास्तव में बहुत बड़ी साहित्यकार हो? ये सब चुटकले तुम्हारा इतना सुन्दर वर्णन करते हैं और ये ही शब्द उस गुण्डे के लिये इतने ही ठीक हैं जो एक खरगोश को नहीं पकड़ सकता। अच्छा सलाम भाई, सलाम!"

१६. शैतानी का फल

नदी के किनारे तख्तों का एक ढेर जमा था जो नाव में रखकर शहर में बेचे जाने वाले थे। एक बन्दर को तख्ते की बड़ी सख्त जरूरत हुई, वह उससे कई काम निकाल सकता था। अब उसने सोचा क्या तरकीब की जाय जो एक तख्ता हाथ लगे और कहा, "चुरा तो मैं सकता नहीं क्योंकि इस जरा से काम के लिए कौन जान जोखों में डाले। वैसे तो मैं एक आसानी से निकाल सकता हूँ लेकिन लोग मुझे चोर कहेंगे और वह कोई अच्छी बात नहीं है। तो ऐसा करूँ यहाँ लुक कर बैठ जाता हूँ जब सब के सब चले जायेंगे तो चुपके से एक तख्ता ढेर में से निकाल कर पानी में फेंक दूँगा और उसे ढूँढने के लिए खुद कूद पड़ूँगा। तब लोग समझेंगे यह मैंने खुद खोज निकाला है और वे कुछ नहीं कह सकेंगे। बस यही ठीक है।"

इस प्रकार जब सब वहाँ से चले गये तो बन्दर ने एक तख्ता निकाल कर नदी में फेंक दिया और उसके पीछे खुद भी कूद पड़ा। लेकिन वह तैराक नहीं था और नदी एक तो बहुत गहरी थी दूसरे उसका बहाव बड़ा तेज था इसलिए तख्ते से चिपटा हुआ वह मझधार में हाथ पैर फटकारता रहा। कभी वह तख्ते पर होजाता और कभी तख्ता उसके ऊपर। दोनों एक दूसरे के ऊपर तले होते हुए नदी के बहाव के साथ बहते चले गये। किनारे तक पहुँचने का उसे मौका ही न मिला। आखिरकार, चूँकि उसने बहुत ज्यादा पानी निगल लिया था

इसलिए उसने तख्ते को छोड़ दिया। फिर वह नदी के धरातल पर डूबा और मर गया।

इस कहानी से साम्राज्यवादियों का स्मरण हो आता है जो अपनी चालाकी में बहुत यकीन रखते हैं। जिस देश पर उन्हें हमला करना होता है वे उसे पानी में ढकेल देते हैं और फिर उसे बचाने की तिकड़में करते हैं और सोचते हैं कि इस तिकड़म से वह देश उनका हो जायगा। लेकिन फिर भी नतीजा उनकी असफलता ही में निकलता है। अनेक संघर्षों और लड़ाईयों के बाद वे हार-झकमार कर उसे हाथ से जाने देते हैं बल्कि उसे जाने ही नहीं देते खुद भी उसके साथ मौत के घाट उतर जाते हैं।

२०. षडयंत्र का भेद खुला

एक भेड़िये ने जब यह सुना कि एक लकड़हारा पहाड़ की ओर आ रहा है तो उसने अपनी योजना बयान करते हुए एक कविता रची :—

इस बार मैं अक्ल से लड़ूँगा ताकत से नहीं,
क्योंकि मैं विद्वान भेड़िया हूँ।
पहले तो उससे रखवा लूँगा हथियार,
और फिर कर दूँगा उसे साफ़ ॥

इसलिए वह अपने कूल्हों के बल निश्चल हो बैठ गया जैसे कोई बड़ा लकड़ी का गट्ठा पड़ा हो और सुहावने मौके का इन्तजार करने लगा।

इतने में लकड़हारा आ पहुँचा। उसने पहाड़ की ओर देखा और एक दम गीत गढ़ लिया।

ओहो ! क्या गट्ठा पड़ा है
दूर से देखो तो गट्ठा
और गट्ठा ही नजदीक से भी
लगाऊँ एक कुल्हाड़ी !
और उड़ जाएँ इसके परख ये

जब भेड़िये ने यह सुना तो चंपत हो गया। शत्रु की साजिश को खोल देना उसे खत्म कर देना।

२१. साहस की विजय

एक रीछ पहाड़ की चोटी पर घमण्ड और ढीठता भरी सूरत बनाये ऊकड़ूँ बैठ गया। उसकी इस हरकत से चीता, तेंदुआ, भेड़िया और सूअर सब लाल-पीले हो उठे और साथ ही उन्हें कुछ डर सा लगा।

उन्होंने कहा, इससे निपटना टेढ़ी खीर है भैया। उसे जीतने का एक ही तरीका है कि एकदम उस पर धावा बोल दो।" वे सब एक दूसरे से गुप्त रूप से मिले और उसे नष्ट करने का तरीका सोचा। पहले तरीका तो यह तय पाया कि पहाड़ के आस-पास उन्होंने एक गहरी खाई खुदवाई जिसमें उन्होंने नुकीली लकड़ियाँ लगा रखी थीं। इस प्रकार यदि वे रीछ को घेर कर वहां ले आते तो वह वह मौत का प्यारा हो जाता।

जब सारी तैयारियाँ हो चुकीं तो उन्होंने एक चिड़िया को रीछ के पास भेजा और उसे एक भोजन पर दावत दी। उससे कहलाया गया कि उन लोगों ने एक लोमड़ी मारी है और वे तब तक उसे खाना शुरू नहीं करेंगे जब तक वह न आ जाय। लेकिन रीछ नें कोई उत्तर न दिया।

जब वे देर तक उसकी राह देखते रहे और वह न आया तो वे समझ गये कि उनकी पहली कोशिश विफल हो गई है। चुनांचे उन्होंने एक और चाल चली। इस बार उन्होंने जहर के कारण मरने का बहाना बनाया और सब के सब लेट गए।

उन्होंने चिड़िया को रीछ के पास इसकी सूचना के लिए भेजा कि वे सब मर गए हैं लेकिन उन्होंने ढेरों जायदाद छोड़ी है। जिसका अधिकारी वही है। अब भी रीछ चुप रहा।

इस बार भी असफलता का मुँह देखने के बाद उन्होंने तीसरी चाल चली। उन्होंने फिर चिड़िया से यह कहलवाया कि पहाड़ ज्वालामुखी है जो फटने वाला ही है और अगर रीछ वहाँ से न हटा तो वह भस्म हो जावेगा। लेकिन रीछ कुछ कहने के बजाय केवल हँस दिया।

अब जबकि उनकी सारी कोशिशें नाकाम रही थीं चीता वगैरह सिवाय इसके क्या कर सकते थे कि जोर-जोर से रीछ को गालियाँ कोसने दें और रीछ को वहाँ से बुलालें। लेकिन रीछ ने उनकी तरफ देखे बिना ही अपने आपसे कहा, "इन्होंने अपनी अक्ल तो सारी बेच खाई और अब सूखे टुकडों पर कौवे पकड़ रहे हैं।"

जो व्यक्ति शत्रुओं की ढोंगपूर्ण भलमनसाहत से सहज प्रभावित नहीं होते वे शत्रुओं द्वारा लगाए गए जाल में कभी नहीं फँस सकते।

२२. कमजोर और ताकतवर का मेल

एक मासूम मेमना बेचारा दुर्भाग्य का मारा एक शेर के हाथ पड़ गया और गिड़ा-गिड़ा कर उससे प्राणों की भीख मांगने लगा। आखिरकार शेर को उस पर दया आई और उसने उसे छोड़ दिया। लेकिन मेमना फौरन वहाँ से भागा नहीं। उसने सोचा जब शेर ने इतनी दयालुता दिखाई है तो जरूर उसे मुझसे कुछ लगाव हो गया है इसलिए उसने साहस बटोरा और इस आशा में कि शेर उसे अपना धर्मपुत्र बना लेगा वहीं बैठा शेर की राह देखने लगा फिर जब शेर अपने शिकार की तलाश में घूमता फिरता फिर वहाँ आया और उसने देखा कि मेमना अभी तक वहीं मौजूद है तो एक ही झपट्टे में उसे निगल लिया।

२३. व्यर्थ की लड़ाई मोल ली

तीन आदमियों ने एक शिकारी बन्दूक ली और एक पहाड़ी पर रीछ मारने के लिए गए। चूँकि वे बहुत बहादुर थे जैसे ही उन्होंने एक रीछ को पहाड़ की चोटी से कहीं दूर बैठा हुआ देखा तो खुशी से चिल्ला उठे : "जल्दी करो! वर्ना कहीं वह भाग न जाय!"

वे तीनों कुछ-कुछ फासले से पहाड़ पर दौड़े, लेकिन रीछ भी उनकी तरफ बढ़ने लगा और जरा देर में कोई आधे रास्ते में आ गया। एक बारगी तो वे चकित रह गए लेकिन फिर उत्तेजित हो बोले।

"बहुत अच्छे! तो वह हम पर चढ़ा आ रहा है, हम भी उस पर हमला करेंगे।"

एकदम उन्होंने फायर किया लेकिन जब मुड़कर देखा तो रीछ मुड़कर उन्हीं के पीछे आ रहा था। उन्होंने एक दूसरे की ओर देखा और हक्के बक्के रह गए। फिर जल्दी में कहा, "हम उसके सामने भागे जा रहे हैं और वह हमारा पीछा कर रहा है।

फिर वे दुबारा घूमे और रीछ से मुठभेड़ करने की ठानी लेकिन रीछ अचानक बीच में ही रुक गया और ऐसा लगा जैसे वहां बैठा उनकी इन्तजार करता है। यह देखकर वे भी रुक गए। "यह गलत है!" उन्होंने कहा "वह हमारी राह देख रहा है, क्या हम उसे छेड़ें।"

उन्होंने बिल्कुल निश्चल होकर उसी तरह तनाव की स्थिति में रीछ को देखा जिस तरह रीछ ने उन्हें देखा और उनका यह घूरना काफी देर तक होता रहा। फिर तो वे दुबारा भिड़ गये और कहा, "अब तो भई वह हमारे बिल्कुल सामने आ गया है क्यों न हम अपनी गोलियाँ उसी पर दागें ?"

उन्होंने एक साथ अपनी बन्दूकें उठाईं, निशाना साधा और गोली चला दी। लेकिन जाहिर है रीछ भी तैयार था ही वह भी मैदान में आ गया और कभी वह पूर्व में भागता, कभी पश्चिम में यहाँ तक कि सारा पहाड़ रीछों की भगदड़ से भरा-सा लगने लगा और उनके सारे निशाने चूक गये। जब उन्होंने अपनी बन्दूकें नीची कीं तो देखा कि रीछ उसी तरह बैठा हुआ है जैसे पहले बैठा था।

"अरे यह तो हिलता ही नहीं, एँ ?" वे बोले ऐसा करें इसे घेर कर एक तरफ खेद दें फिर हम लोग बिखरकर उसे दबोच लेंगे !"

वे दायें-बायें छँट गये और ऐसा नक्शा बनाया कि काम पड़ने पर एक दूसरे की सहायता कर सकें और रीछ को कहीं से भी न भागने दें। फिर भी दूसरी बार भी उन्हें ऐसा लगा जैसे रीछ अलग-अलग उन पर हमला कर रहा है और वे उससे ऊपर अपनी जानें बचाने के लिये अंधाधुंध भाग रहे हैं। आखिर में वे फिर पहाड़ की चोटी पर आकर मिले लेकिन अब रीछ पहाड़ के नीचे पहुँच चुका था मानो उन्हें

उनका रास्ता रोके हुये हो। अब सिवाय इसके कि वे किसी तरह भाग निकलें कोई चारा नहीं था और अब हो गई थी शाम।

वापस आते हुए तीनों शिकारी बड़ी थकावट और पीड़ा महसूस कर रहे थे।

"हमने दिन भर उसका पीछा किया और नतीजा सिफर, एक ने कहा। "और फिर कितने खतरे मोल लिये। ऐसा लगा जैसे हम रीछ का शिकार नहीं कर रहे बल्कि वह हमारा शिकार कर रहा था। यह वास्तव में असह्य अपमान है।"

"अगर अपमान ही होता तो कोई बात न थी, "दूसरे ने कहा "लेकिन भय तो यह है कि अब हमारी तकलीफों का कोई अन्त नहीं। देखो न अब हमने उसे छेड़ दिया है वह हमें चैन न लेने देगा। हमारा अब चिन्तित होना बिल्कुल उचित है।"

"चलो जल्दी से भाग निकलें। तीसरे ने सुझाया। "कहीं हमारा पीछा तो न कर रहा हो।"

यह मूर्खों की अदूरदर्शिता का प्रमाण है जो व्यर्थ ही लड़ाई में कूदते हैं और जाते समय तो बड़े सिर उठाकर जाते हैं लेकिन आते वक्त दुम दबा कर आते हैं।

२४. झगड़े का फैसला

दो बन्दर आड़ू के एक बाग में घुस गये। पहले तो उन्होंने अपने ही लिये एक प्रतिबन्ध लगाया। "अपन तो बन्दरों में चोरी की प्रथा खत्म करना चाहते हैं ना ?" उन्होंने कहा। "लेकिन जब तक हम बन्दर खुद अपने आपको न रोकेंगे कुछ नहीं हो सकता। ऐसा करें तुम मेरी निगरानी करो और मैं तुम पर नजर रखता हूँ; इस प्रकार अगर हम चुराना भी चाहेंगे तो भी नहीं चुरा सकते।"

और बस यही बीड़ा उन्होंने उठा लिया।

जब दूसरा बन्दर जरा चूका कि एक ने मौका देखकर एक आड़ू तोड़ लिया। झट उसे मुँह में ठूँस कर वह मुड़ा और दूसरे बन्दर को देखने लगा।

दूसरा बन्दर भी कुछ कम न था। जब पहले ने आड़ू तोड़ा और मुँह फेरा था तो उसने भी एक आड़ू तोड़ लिया था। उसे मुँह में भरकर वह भी अपने साथी को देखने लगा।

इस तरह दोनों बन्दर आड़ू मुँह में ठूँसे हुये खामोशी से एक दूसरे को तकते रहे।

लेकिन जरा देर में ही दोनों का भंडा फूट गया। एक ने गुस्से से दूसरे की ओर इशारा करते हुये नाक में कहा, "देखो तुम...तुम..."

उसी क्रोध से उंगली उठाते हुये।

"और तुम......" दूसरे बन्दर ने भी नाक से कहा।

प्रत्येक समझ गया कि दूसरा घृणा के योग्य है, लेकिन फिर भी दोनों बड़े हास्यास्पद लग रहे थे। इसलिये जो भी दोनों एक दूसरे को उलाहने देना चाहते थे पर उसके बजाय जोर से हँस पड़े। फिर प्रत्येक के मुँह में से एक-एक झाड़ू बाहर निकल पड़ा।

अब तो दोनों बन्दरों ने कहकहे लगाते हुये अपने झाड़ू उठाये। फिर दुबारा एक दूसरे को तकने लगे और एक साथ गाने लगे।

"कुछ तुम समझे।

कुछ हम समझे।

बस समझा नहीं सकते हा हा!"

गाने के बाद वे एक दूसरे के आगे झुके, हरेक ने झाड़ू मुँह में सरकाया और धीरे-धीरे चबाते हुये कहने लगे। "अहा, कितने मजे में हमने अपनी छोटी-सी तकरार तय कर ली!"

२५. भलाई का ढोंग

कुछ बन्दर एक सड़क पर चले जा रहे थे कि उन्हें एक लाश नजर आई जो फटे-पुराने बोरिये में लिपटी हुई वहां पड़ी थी।

बन्दरों के सरदार ने अपना सिर हिलाया और कहा, "वह देखो, कितनी बुरी बात है। मैं हमेशा कहता रहा हूं जिन्दगी तो होती ही है और जब कोई मर जाता है तो उसके बाद कुछ भी नहीं होता। यही एक ऐसा मामला है जहाँ आदमी अपने को खुश कर सकता है। फिर भी, हमने माना कि मृत्यु के साथ हर चीज का अन्त हो जाता है लेकिन लाश को तो पहाड़ी पर दफना देना चाहिये, है न माकूल बात! लेकिन मर जाने पर कौन इन बातों में पड़ता है इसलिये, हम इसे उठाकर पहाड़ी पर ले चलते हैं।"

सब बन्दर लाश के गिर्द जमा हो गये और हरेक ने चटाई का एक-एक कोना अपने पंजों में दबाकर उसे उठाने की कोशिश की। वे दो पंक्तियों में बंट गये और मजबूती से चटाई को दबा कर ले जाने लगे। आखिर कार वे पहाड़ी पर पहुँचे और वहाँ जाकर उन्होंने चटाई को रख दिया। फिर कुछ मिनट तक वे सिर झुकाये शोक में खड़े रहे। इसके बाद उन्होंने कुछ मिट्टी ली और उसे चटाई पर फेंका, और जब वह दफना दी गई तो वे सब चले गये।

फिर भी लाश उसी तरह सड़क के किनारे पड़ी रही। और अब चूँकि चटाई वे ले गये थे इसलिये वह बिल्कुल खुली हुई वहाँ पड़ी थी।

२६. मुर्दों का देश

एक लोमड़ी कुछ खरगोशों के खेत में घुस गई। चूँकि खरगोश बिना किसी कारण के उछलते हुये भागने लगे तो लोमड़ी ने उनका पीछा किया और किसी तरह दो-चार को खा ही गई। यह हरकत उसके लिये फायदेमंद सिद्ध हुई इसलिये कि अब वह स्थान शान्त हो गया था और लोमड़ी पेट भर कर खा चुकी थी। जब उसने खेत को जाँचा-परखा तो वह बड़ी प्रसन्न हुई और सिर हिलाकर बोली, "यह वास्तव में यथा नाम तथा गुण जैसा ही प्रदेश है बड़ा ही बढ़िया। सुन्दर दृश्य हैं, अच्छी उपज है और मैत्री पूर्ण निवासी वास करते हैं!"

लेकिन कुछ देर घूमने-फिरने के बाद लोमड़ी को वह जगह बड़ी उक्ता देने वाली दिखाई दी। "बड़ी बकवास है यह जगह बहुत ही बुरी !" उसने साँस लेकर कहा। "कहीं जिन्दगी का तो नाम-निशान तक नहीं है, और सारा प्रदेश सुनसान जंगल-सा लग रहा है। सिवाय मुर्दों की हड्डियों और नाश के लक्षणों के कुछ दीखता ही नहीं, जिधर देखो लाशें बिखरी पड़ी हैं, गाड़ी भी तो नहीं गईं।"

लोमड़ी के लिये वह भयानक दृश्य असहय हो गया। उसके हृदय में अपार दया उमड़ आई। उसने अपने ही हाथों खरगोशों की हड्डियां जमा कीं, एक कब्र खोदी और उन्हें गाड़ दिया। फिर यह महसूस करते हुये कि उसने एक भलाई

की है, वह सिर हिला कर कहने लगी "मैं समझती हूँ मुझे आपको बधाई देनी चाहिये। कम से कम मैंने लोगों को आराम-घर में तो लिटा दिया, अब वे मेरी बड़ाई के गीत गायेंगे।" चुनांचे उसने एक तख्ती वहां लगा दी जिस पर यह अंकित था; "सद्गुणी सरकार की स्मृति में।"

वापस आते समय लोमड़ी ने एक क्षण के लिये कुछ सोचा और फिर कहा, "जो कुछ होना था मैंने सब कर दिया है और मैं वास्तव में जन-पिता हो चुकी हूँ। मैं यहां बहुत ही तुच्छ मजूरी के लिये आई थी और अब खाली हाथ घर जा रही हूँ।"

२७. तकिया ने नींद हराम कर दी

एक लोमड़ी ने एक मुर्गी पकड़ी और उसे अपने बाड़े में ले गई जहाँ उसने उसके पर तो नोंच डाले मगर उसे खाया नही। "मैं इसे किसी खास मौके के लिये रख छोड़ती हूँ," उसने अपने आपसे कहा। "अभी मै ठीक हुये जाती हूँ और फिर सो जाऊँगी।" मुर्गी को तकिया बना कर वह लेट गई।

लेकिन बड़ी कोशिशों के बाद भी उसे नींद न आई। इसलिये वह उठ बैठी और मुर्गी को लेकर कहने लगी, "यह तकिया कुछ ज्यादा नर्म है इसलिये मुझे नींद नहीं आती। अगर मैं इसकी चरबी का हिस्सा और सारे गोश्त का (जिसमें चर्बी न हो ३/१० हिस्सा खालूँ तो फिर यह ठीक हो जायगा।" चुनांचे उसने एक छोटा टुकड़ा उसकी पीठ में से उतारा और खा गई। और फिर लेट गई। लेकिन अब भी वह न सो सकी क्योंकि अब तकिया बहुत सख्त हो गया। एक बार फिर वह उठ बैठी और कहने लगी; अभी कुछ ज्यादा गोश्त निकाल लिया था मैंने अब ठीक किये देती हूँ। "चुनांचे उसने सारे गोश्त का बाकी ७/१० और चर्बी का ३/१० हिस्सा खा लिया और खा चुकने के बाद सोने के लिये लेटी लेकिन तीसरी बार वह फिर उठी और कहने लगी अब भी यह ठीक नहीं हुआ! पहले जब मेरे पास कोई तकिया न था मैं सुबह तक तान के सोती थी।" अन्त में मुर्गी का जो कुछ माँस बचा था उसने वह भी चट कर लिया फिर पेट पर हाथ फेरते हुये वह लम्बी हुई और वास्तव में सुबह तक सोई।

२८. धन वालों का कानून

खरगोश अपने घर में आजादी से रहे और कोई बाहर का जानवर उसके काम में दखल न दे इस अधिकार को स्वीकार करते हुये साँप ने एक कानून बनाया और खुद जाकर खरगोश को इसकी सूचना दी ।

उसने कहा, "सुनो, भविष्य में यदि मैं मनमाने तौर पर बिना प्रार्थना पत्र दिये और तुम्हारी आज्ञा लिये तुम्हारे घर में घुस आऊँ तो तुमको अधिकार है कि मुझसे आकर इसकी शिकायत करो ।"

हालाँकि साँप ने इस कानून की घोषणा तो कर दी थी फिर भी उसे अभी खरगोश के कानून समझने के बारे में सन्देह था और साथ ही उसे यह शक भी था कि कहीं खरगोश उसके विश्वास की कमी को फौरन न समझ जाय । इसलिये उसने खरगोश की परीक्षा लेने का निश्चय किया ।

जान-बूझ कर बिना प्रार्थना-पत्र दिये साँप फुर्ती से खरगोश के बिल में घुस गया और उसने खरगोश के एक बच्चे को मार डाला फिर एक दम वहाँ से जाकर बाहर दरवाजे पर बैठ गया और खरगोश के आने और शिकायत की इन्तजार करने लगा । वह बड़ी देर तक उसकी राह देखता रहा लेकिन खरगोश तब भी न आया । और इधर साँप का पारा हर क्षण चढ़ता जा रहा था । वह दुबारा खरगोश के बिल में घुस गया, उसने खरगोश को पकड़ा और गरज कर उससे कहा ।

"तुम कानून का पालन क्यों नहीं करते ?"

"किस कानून का पालन आप मुझसे करवाना चाहते हैं और किसके लिये ?"

"तुम हमारे पास फरियाद लेकर क्यों नहीं आये !"

"अभी गुण्डे भी तुम ही थे, और अब मुन्सिफ भी तुम ही बन बैठे हो। अब मुझे बताओ मैं किस गुण्डे को पकड़ूँ और कौन से मुन्सिफ से फैसला कराऊँ ?"

"सी सी सी !" अब तो साँप अपना क्रोध न रोक सका, एक ही ग्रास में उसने खरगोश को चट कर लिया।

जब साँप ने खरगोश को खा लिया तो उसने यह आम एलान कर दिया। "इस बार मैंने खरगोश को जिस तरह खाया है वैसा पहले नहीं खाया था। यह कानून के अनुसार था और सारी कार्यवाही—गिरफतारी से लेकर दण्ड-देने तक—पूरी तौर पर अमल में लाई गई थी।"

२६. उदार अत्याचारी

कौवा बड़ा विचित्र पक्षी है। वह कहने लगा; "देखो मैं एक उड़ान में जितनी धरती तय कर लूँ वह मेरे आधीन हो जायगी, और मैं वहाँ का राजा हो जाऊँगा।"

"मेरा कानून है; कोई भी परिन्दा हवा में नहीं उड़े, कोई पक्षी जमीन पर नहीं चले और कोई पक्षी पेड़ों पर घोंसला न रखे।"

लेकिन इसमें कुछ कमी थी क्योंकि अगर ऐसा राजा हो तो सारे पक्षी गैर कानूनी करार दिये जा सकते थे। लेकिन उन्होंने पहले की भाँति हवा में उड़ना, जमीन पर चलना और पेड़ों पर घोंसले बनाना जारी रखा। इस बात से तो राजा की मूर्खता प्रकट हो गई।

लेकिन कौवा होता बड़ा विचित्र पक्षी है। आखें घुमाते हुये उसने कहा; "फिलहाल मैं तुम्हें उड़ने, चलने और घोंसले बनाने की आज्ञा देता हूँ और यह तुम्हारे लिये एक खास रिआयत है। मैं बहुत उदार हूँ।"

अब भी बात न बनी क्योंकि पक्षियों ने न केवल उसका आभार माना बल्कि उन्होंने सुनी-अनसुनी कर दी और उन्होंने अपना उड़ना, चलना और घोंसले रखना बराबर जारी रखा। अब तो वास्तव में राजा बड़ा ही बुद्धू लगने लगा।

लेकिन कुछ भी हो कौवा तो विचित्र पक्षी ठहरा ही। उसने फिर वही बात दुहराई; "मैं तुम्हें अभी और उड़ने

चलने और घोंसले रखने की इजाज़त देता हूँ और यह बहुत बड़ी रिआयत है। देखा, मैं कितना नर्म दिल हूँ।"

सब अत्याचारियों के लिये तो उदारता उनके अत्याचार के साथ लगा हुआ जाल है। अत्याचार लोगों से उनके अधिकार छीनने के लिये इस्तेमाल की जाती है और उदारता का प्रयोग उनसे उनका सम्मान छीनने के लिये किया जाता है। चाहे अत्याचारी कितने ही बुद्धू और घमण्डी क्यों न हों सिर्फ इसलिये कि वे और ज्यादा उलझे हुये और अयोग्य हैं वे और अधिक बुद्धू हो जाते हैं और उदारता तो सदा उनके होठों पर ही रहती है।

३०. मैं जिन्दा रहना चाहता हूँ

एक गधा बहुत सख्त बीमार था। उसने बिस्तर पर पड़े हुए ही डाक्टर से कहा : "यह कैसी बीमारी है ?... मैं चाहता हूँ मेरे शरीर में खून का संचार होता रहे और यह है कि रुकता जाता है। मैं अपने अंग हिलाने-डुलाने की बहुत कोशिश करता हूँ लेकिन वे हैं कि मानते ही नहीं। मैं चाहता हूँ—जिन्दा रहूँ और मौत है कि क़रीब आती जाती है। आह डाक्टर !"

डाक्टर एक मशहूर बन्दर था। उसने सिर हिलाकर कहा। "हाँ तुम चाहते हो रक्त संचार होता रहे पर वह रुकता जाता है। तुम अपने अंग हिलाना-डुलाना चाहते हो पर वे मानते नहीं हैं। तुम जिन्दा रहना चाहते हो, फिर भी..."

"तो फिर ?... ओह !"

"हाँ ......।"

बन्दर ने उसे कोई दवा न दी बल्कि गधे ने शान्ति से आँखें मूँद लीं।

वे डाक्टर जो लाइलाज रोगी को दवा नहीं देते संसार के सबसे अधिक नैतिक डाक्टर हैं।

३१. मज़े की दावत

एक भेड़िये और लोमड़ी ने बड़े अफ़सरों का भेष बदला और एक बन्दर उनका नौकर बन गया। वे तीनों साथ-साथ जाँच-पड़ताल के लिये निकले ताकि देखें लोग अब तक अपनी पुरानी परंपरा निभाते हैं या नहीं।

अभी वे जंगल छोड़कर एक घाटी पर ही पहुंचे थे कि उन्हें एक देहातिन दीख पड़ी। "आओ, अपनी जांच शुरू कर दें।" भेड़िये ने कहा, "मैं विश्वास दिलाता हूँ वह बड़ी ईमानदार औरत है। वह हमें कभी धोखा न देगी।"

"ईमानदारी तो एक प्रकार का गुण है," लोमड़ी बोली, "विशेषतः जन साधारण के लिये तो बड़ी आवश्यक है जैसा कि मैं अपने लेखों में अक्सर कहती रहती हूँ!"

"वाह-वाह!" बन्दर ने कहा।

भेड़िया और लोमड़ी आगे बढ़े और बोले: "ओ बाई जी, तुम्हारे यहाँ मुर्गियां भी हैं? ज्यादा नहीं मांगते सिर्फ एक-एक मिल जाती।"

"मैं तो शाकाहारी हूँ," बन्दर ने कहा, "अगर थोड़ी फलियाँ हों तो चलेंगी।"

"आप लोगों का स्वागत है," स्त्री ने कहा, "अन्दर आइये। कभी छट्टे-छमासे ही अच्छे घराने के लोग यहाँ आते हैं। हमारे लिये तो बड़े सम्मान की बात है।"

जब वे तीनों स्त्री के घर पहुँचे तो भेड़िये और लोमड़ी ने तो एक-एक मुर्गी खाई और बन्दर ने एक रकाबी भरके फलियाँ उड़ाईं। लेकिन कोई एक भी तृप्त न हो सका।

"कोई भेड़-वेड़ भी है?" भेड़िये और लोमड़ी ने पूछा। एक भेड़ चार मुर्गियों के बराबर होती है।

"मटर की फलियाँ मिलेंगी क्या?" बन्दर ने पूछा। "मुझे तो ऐसी सस्ती चीजें बहुत भाती हैं।"

"मेरे यहाँ एक भेड़ है", देहाती स्त्री ने कहा, "मटर भी होगी। आप शौक से उन्हें खाइये।"

भेड़िये और लोमड़ी ने भेड़ को आधा-आधा खाया। बन्दर एक टोकराभर के मटर खा गया और जो बची थी उन्हें उसने अपने बोरे में भर लिया। फिर भी भेड़िये और लोमड़ी की तृप्ति न हुई और वे बोले :

"सूअर होंगे? जरा मुंह का मजा बदलने के लिये कुछ और चाहिये।"

"कुछ अखरोट मिल जायेंगे?" बन्दर बोला।

"मेरे पास एक खूब मोटा सूअर है!" देहाती स्त्री ने कहा। "मैं तो आप महानुभावों से प्रार्थना करने वाली थी कि आप उसे भी चख लें। मेरे पास अखरोट की एक टोकरी भरी है।"

फिर भेड़िये और लोमड़ी ने सूअर आधा-आधा खा लिया। बन्दर ने अखरोट की आधी टोकरी खाली करके

अपने बोरे में भर लिये और बाकी जो उसे बड़े अच्छे लगे वह उसने खा लिये। लेकिन भेड़िये और लोमड़ी का दोजख अभी तक न भर सका था और इससे वे दोनों गरम हो गये।

"अपनी गाय यहाँ लाओ, हम उसे भी खायेंगे।" उन्होंने हुक्म दिया।

"मेरे लिये भी कुछ और लाओ!" बन्दर ने कहा।

देहातिन गाय लेने गई और साथ में कुछ और भी ले आई।

लेकिन गाय खाने के बाद भी भेड़िये और लोमड़ी ने महसूस किया कि उनके पेट नहीं भरे हैं। बन्दर भी और कुछ खाना चाहता था।

"और क्या है तुम्हारे पास!" उन्होंने पूछा।

"एक चीज़ और है मेरे पास!" स्त्री ने कहा। उसके हाथ में एक कुल्हाड़ी थी जिससे वह लकड़ियां काटती थी और उसने उन्हें भी उसका मज़ा चखाया। और भेड़िया, लोमड़ी तथा बन्दर तीनों जीवित उस देहातिन के घर से न लौट सके।

३२. विचार और व्यवहार

कई दिनों तक बर्फ गिरती रही थी, यहाँ तक कि सारे पहाड़ बर्फ से ढँक गये थे और विशालकाय, श्वेत पके हुये रोल लगने लगे थे। धरती के तो सारे निशान गायब हो चुके थे।

"बहुत अच्छे, यह बड़ी उम्दा चीज़ है!" एक कस्तूरी मृग ने कहा जिसने बाहर झाँकने के लिये अपनी गुफा में एक खिड़की खोल ली थी। "मेरे लिये तो बस यही बेहतरीन मौसम है। मेरा कमरा काफी गर्म है और खाना भी मैंने काफी पका लिया है। शिकारी अब मुझे नहीं पा सकते क्योंकि सारे रास्ते छिप गये हैं।" उसने बड़े इत्मेनान के साथ घास चबाई। उसने उसे एक बार तैयार करके रख लिया था और अब अवकाश मिलने पर बर्फीला प्राकृतिक दृश्य देख रहा था।

लेकिन बर्फ से ढंके हुये दृश्य के विचार ने इस चैन से बैठे हुये कस्तूरीमृग को यह महसूस कराया कि वह बहुत शुद्ध हो गया है। चुनाँचे उसने कहा, "नहीं-नहीं। इस गंदे कमरे में बर्फ का आनन्द लाभ करना असम्भव है। मैंने पहाड़ के ऊपर एक गढ़ी बनाई है। मैं शराब का घड़ा, कविता की पुस्तक वगैरह लेकर ऊपर पहुँच जाता हूँ और वहीं कुछ दिन गुजारूंगा।"

इस प्रकार कस्तूरीमृग ने वह गुफा छोड़ दी और दौड़कर

पहाड़ पर बनी हुई गुफा में चला गया। बस फिर क्या था वह जो पहाड़ पर चढ़ा तो शिकारी को उसके पद निशान देखकर उसे ढूँढना सम्भव हो गया।

यदि अमल नहीं छिपाये जा सकते तो विचार भी गुप्त नहीं रह सकते। क्योंकि विचारों के ही अमल के होते हैं।

२३. दुश्मन को छोटा मत समझो

एक मुर्गे ने देखा कि ज़रा-सा कनखजूरा ज़मीन पर रेंग रहा है तो झट अपने पर फड़फड़ाये जैसे अपनी लड़ने की शक्ति बटोर रहा हो। और उस नन्हे जानवर को निगल जाना चाहता हो।

पास ही एक हंस ने जब मुर्गे की यह हरकत देखी तो उसे लगा जैसे वह कोई बहुत बड़े युद्ध की तैयारी कर रहा हो। उसने जरा मजा लेकर कुछ व्यंग के साथ कहा :

"आहा ! यह जोश है तब तो भाई पहाड़ हिला दोगे।"

"तो और क्या करें ! मैं तो कहता हूँ कि दुश्मनों को हमें दुश्मन ही समझना चाहिये चाहे छोटे हों या बड़े।" मुर्गे ने झिड़क कर कहा।

३४. खुशामद की ताकत

एक जल-भैंस थी जो इतनी हिंसक और तेज़ स्वभाव की थी कि सब जगह बदनाम थी। एक दिन उसे बहुत गुस्सा आया, अपना रस्सा उसने तोड़ा और खेतों में ऐसी अंधाधुंध भागी कि बहुत-सी फसल उसने रौंद डाली। हरेक ने उसे पकड़ने की कोशिश की। उन्होंने उसे घेर लिया, लेकिन जितने ज्यादा लोग वहां आते गये भैंस भी उतनी ही हिंसक होती गई। उसने अपने सींगों से उन पर वार किया और अनेक व्यक्ति बुरी तरह घायल हो गये लेकिन उस पर वे काबू न पा सके।

उसी समय सौभाग्यवश एक गडरिया दौड़ा हुआ आ पहुँचा। सब जानते थे वह बहुत छोटा है लेकिन उसकी बातें बड़ों की-सी थीं।

"तुम सब बेवकूफ़ हो," उसने उनका उपहास किया। और आश्चर्य की बात कि बिना किसी भय के वह मुस्कराता हुआ भैंस के पास चला गया। उसने घास का एक गट्ठा जो वह लाया था भैंस के आगे डाल दिया और उसकी पीठ थप-थपाने के लिये पीछे खिसक गया। भयंकर पशु तुरन्त ठण्डा पड़ गया और इतने में लड़का उछल कर उसकी पीठ पर जा बैठा और ज़ोर-ज़ोर की आवाजों से वह उसे घर की ओर ले जाने लगा।

भीड़ ने चैन की साँस ली और लज्जास्पद अवकाश के बाद उन्होंने स्वीकार किया : "सत्य भी यही है हम बिल्कुल बेवकूफ ही हैं।"

चापलूसी वास्तव में दूसरों को काबू में करने का सब से ज्यादा सबल तरीका है।

३५. जायदाद का लालच

गाय और कुत्ते ने तय किया कि एक दिन शाम को वे एक साथ निकल भागें और दौड़ कर दूर दराज पहाड़ों में पहुंच जहाँ आजादी से जिन्दगी बसर कर सकें।

शाम को जैसा कि निश्चित हुआ था, कुत्ता आया और उसने अपने तीखे दांतों से गाय की रस्सी काटनी शुरू कर दी। लेकिन गाय ने जल्दी से उसे रोक दिया और कहा, "अरे ऐसा न करो! महरबानी करके रस्सी की गांठें खोलो यह रस्सी बड़ी अच्छी है। और मेरी कोई जायदाद नहीं है, मैं इस रस्सी को अपने साथ ले जाना चाहती हूँ।" कुत्त को गाय की आज्ञा का पालन करना पड़ा उसने रस्सी को खूंटे से खोल लिया, अब सिर्फ वह गाय की नाक में लटका हुआ था जिससे उसे लेजाने में आसानी हो गई थी। चुनांचे वे दरवाजे से बाहर निकले और भाग लिये।

फिर भी जब कुत्ता काफी दूर तक दौड़ता गया तो गाय बीच में रुक गई। उसकी रस्सी सड़क के किनारे पड़ी एक घिसी-पिटी चट्टान से अटक गई। इसलिये उसके मालिक के लिए जो उसका पीछा कर रहा था उसे पकड़न और लौटा लाने में आसानी हुई।

"मेरी बस एक ही चूक हो गई कि मैं इस रस्सी को अपने साथ ले जाना चाहती थी," गाय ने अपने आप से कहा? "यह जायदाद से चिपके रहने की वृत्ति ही ने मेरा काम बिगाड़ा है।"

३६. प्रेम और भावुकता

वसन्त का मौसम था। एक सुहावने दिन एक किसान अपनी गाय को लेकर खेत जोतने गया। गाय के पीछे उसका बछड़ा खेलता-कूदता चला गया। जब गाय को जोता गया और वह काम शुरू ही करने वाली थी कि उसने अपने बेटे से कहा। "बेटा, तुम जाओ पास के उस मैदान में खेलो। अच्छा बच्चे!"

लेकिन वह सुशील बछड़ा अपनी मा का बड़ा आदर करता था। उसने अपना नन्हा सिर हिलाया और बोला, "नहीं अम्मा, मैं तुम्हें नहीं छोड़ना चाहता। तुम्हें कितनी मुसीबत तो उठानी पड़ रही है। मैं भी तुम्हारे साथ चलूँगा अम्मा और मुझे यकीन है तुम्हारा बोझ कुछ हल्का हो जायगा।"

उसकी मा खुश हो गई और उसने उसे वहीं ठहरने दिया। लेकिन अब उसके कारण उसे बराबर बच्चे पर नजर रखनी पड़ी क्योंकि उसे डर था कहीं वह गिर न पड़े या बहुत तेज चलने लगे या बहुत पीछे न रह जाय। इस कारण उसकी रफ्तार काफी सुस्त हो गई। किसान इस बात से बहुत असन्तुष्ट हुआ और गाय को चलाने के लिये बराबर चाबुक मारता रहा। और इस तरह गाय को हमेशा की तरह कहीं अधिक गालियाँ और मार सहनी पड़ी। आखिरकार उसने फिर बछड़े से कहा। "मेरे प्यारे बच्चे अगर तुम्हें वास्तव में

मुझसे प्रेम है तो मुझे छोड़ दो ताकि मैं इस भारी दण्ड से वच जाऊँ। तुम्हारे कारण मुझ पर जो चाबुक पड़ी है उन्हें गिनना मुश्किल है।"

प्रेम और भावुकता में बहुत-सी ऐसी बेकार चीजें हैं जिन्हें आप पसन्द करते होंगे लेकिन उन्हें त्याग देने में आप का कल्याण है ।

३७. जिन्दगी का तूफान

कड़ी गर्मी पड़ रही थी। एक दिन तीसरे पहर को जब प्राणी झुलस गये थे पसीने में शराबोर थे बिजली पहले तो कुछ दूर हल्की-सी कड़की और फिर समीप से समीपतर होती गई। क्षितिज के ऊपर काले बादल इकट्ठे हो गये। यह स्पष्ट था कि तूफान उठ रहा है।

एक मकड़ी जो एक पेड़ पर अपने जाले पर खड़ी थी तूफान को बुलावा देने की बड़ी इच्छुक थी या उसका देवता बनना चाहती थी। चुनांचे उसने जोर से कहा। "हम कितना ही उसे देखें, वक्त करीब आ गया है! ओ, चमकदार सुनहरे नाम निकल और फनफना! ओं सर्व भयानक बिजली तड़ख! हवा और बारिश जरा फुर्ती से आओ! तूफान जितना बड़ा होगा बेहतर है।"

फिर तूफान उठा। आप मकड़ी को देखते। वह अपने जाल के साथ भय से कांपने लगी और अन्त में घबरा कर एक पत्ते से लिपट गई और वहाँ हवा के झोंकों ने उसे ऐसा उछाला कि वह बेहोश हो गई। जब तूफान उतर गया तो एक बड़ा सुन्दर इन्द्रधनुष पूर्वी आकाश पर फैल गया, संध्या के बादल पश्चिम में नजर आने लगे यहाँ तक कि डरपोक टिड्डे भी संध्या की ठण्डक की सराहना में गीत गाने लगे तब

कहीं जाकर उसने अपनी आँखें खोलीं और वक्त मालूम किया।

"आह मित्र," पेड़ ने कहा, "अगर तुम सही किस्म के तूफान आने पर थोड़ा बहादुर हो जाया करो तो तुम एक महान भविष्य वक्ता कवि के नाम से याद किये जाओ।"

३८. इज्जत का भूखा

एक चूहे ने देखा कि सभी चूहों के एक-एक दुम है, अगर उसके भी वही है तब तो वह भी दूसरों की तरह मामूली-सा चूहा कहलायगा। यह कहने का उसे साहस ही न होगा कि वह एक असाधारण चूहा है और उसे बहुत शर्मिंदगी होगी। इसलिए एक दिन उसने निश्चय किया और अपने मित्र के पास जाकर उसने प्रार्थना की कि वह उसकी दुम काट डाले।

"हालाँकि सभी लोग अपनी उम्मीदें अपनी दुमों पर रखते हैं और उसे अपनी जिन्दगी का सबसे बड़ा खजाना समझते हैं, लेकिन मैं इसे नहीं चाहता!"

उसका मित्र उसे अच्छी तरह जानता था और जानता था कि इस हरकत के लिए वह बाद में पछतायेगा चुनाँचे उस ने चूहे की दुम में एक गिरह लगादी और उसे जुल दे दी कि दुम वास्तव में काट दी गई है।

अब चूहे ने यह समझ कर कि उसकी दुम कट चुकी है यह चाहा कि वह अब एक नया फैशन चलायेगा और उसके द्वारा सब में प्रसिद्ध हो जायगा। लेकिन जब वह अकड़-अकड़ कर इस प्रकार दूसरे चूहों के सामने चलने लगा जैसे कोई भारी-भरकम व्यक्तित्व का महान् व्यक्ति चला आ रहा हो तो पहले तो उसके साथी उसे आश्चर्य से तकने लगे पर फौरन ही वे ज़ोर का ठहाका मारकर हँस पड़े। वे हँसते रहे, हँसते रहे और कोई उस चूहे के बारे में बातें करता रहा तो कोई व्यंग्य कसता रहा और सबने उसका ऐसा मजाक उड़ाया कि उसने

शर्म के मारे जमीन में डूब जाना चाहा। आखिरकार वह अपमानित होकर भागा। फौरन वह दौड़ा-दौड़ा अपने दोस्त से शिकायत करने पहुँचा और उससे राय माँगी कि अब वह क्या करे।

"आह, मेरी तो पहली बार ही में तकदीर फूट गई!" उसने बड़े दुःख के साथ कहा। "अब तो मेरी एक ही आस है कि तुम्हारे पास जो मरहम है उसे लगा कर मेरी नई दुम उगा दो। और अगर ऐसा न हुआ तो मैं खुदकशी कर लूँगा।

सौभाग्य की बात कि उसके मित्र ने उसकी दुम की गाँठ खोलदी और चूहा अपने पुराने आकार में आगया। और अब चूहे ने यह महसूस करके अपने को धन्य समझा कि उसके भी दूसरों की ही तरह साबित दुम है।

३६. साफ़ और चालबाज

एक बिल्ली खाने की तलाश में एक रसोई खाने पर चढ़ गई। पहली चीज़ जो उसे वहाँ दिखाई दी एक बर्तन था जिस पर कोई ढक्कन नहीं था। लेकिन जब उसने देखा कि बर्तन खाली है तो बोली: "दरअसल इसकी तरफ देखने की तो जरूरत ही न थी, जाहिर है इसके अन्दर क्या हो सकता था।" फिर उसने दूसरे बर्तन को देखा जिस पर ढक्कन था और देर तक उसे घूरती रही। और जितनी ज्यादा देर तक वह उसे तकती रही उसका लोभ उतना ही बढ़ता गया। चुनाँचे उसने बड़ी हिम्मत से ढक्कन उतारा लेकिन हाय, वह भी खाली था।

बिल्ली को बड़ी निराशा हुई और चिन्तित हो कहने लगी, "यहाँ तो सब के सब खाली हैं।"

सिर्फ कुछ ही लोग जब उनके पास कुछ नहीं होता अक्लमंदी की बातें करते हैं। दूसरे ऐसे हैं जो जान बूझकर अपने आप को रहस्यमय बना लेते हैं और यह जाहिर करते हैं कि वे बड़े गहरे हैं। वे लोगों को चालबाजो में ले लेते हैं और उनका बहुत समय जाँचने-परखने में खर्च करवा लेते हैं लेकिन असल में उससे उनको कुछ नहीं मिलता!

४०. कायरों की बहादुरी

एक था बंदरों का गिरोह। चूंकि वे बन्दर बेकार और निकम्मे किस्म के न थे चुनाँचे वे सब के सब एक ऊँचे पहाड़ पर चढ़ने के लिए निकल पड़े। लेकिन पहाड़ भी कोई मामूली नहीं था बल्कि उसकी एक विशाल गंजी चोटी थी जो बहुत ऊँची और सुन्दर थी जिस पर खड़े होकर कोई भी विस्तृत देहाती प्रदेश नदियां और कुछ भी कुदरती नजारा नीचे मौजूद था देख सकता था। लेकिन बदकिस्मती उनकी कि बेचारे अभी चोटी पर पहुँचे भी न थे कि एक तूफान बरपा हो गया! तूफान भी कोई छोटा-मोटा नहीं था जिससे केवल डरपोक ही डरें बल्कि चारों ओर से काले बादल उमड़ आये जिससे सारा धरती-आकाश काला हो गया। बिजली निरंतर तड़खती रही जैसे सारा आसमान आग की लपटों में हो। और बादलों की भयानक गरज और गड़गड़ाहट तो और भी खौफ-नाक थी ऐसा मालूम होता था जैसे धरती फट रही है।

वास्तव में वह ऐसा भयंकर दृश्य था कि ये असाधारण स्वभाव के बन्दर सारे डर के मारे पीले पड़ गये और बुरी तरह लरजने लगे लेकिन वे कर ही क्या सकते थे? फिर पहाड़ की चोटी पर न कोई गुफा थी जहां वे शरण ले सकते और न ही कोई जंगल जहां वे छिप सकते थे। वे डर कर उड़ना या सीधे नीचे घाटी में कूद पड़ना अपनी शान के खिलाफ समझते थे।

"ओह, हमारा तो हो गया बेड़ा गर्क!" वे भयभीत हो

चिल्लाये। और घबराहट ने उन्हें बुरी तरह दबोच लिया। "'लेकिन हमें इस भयानक तौर से मरने का तो ख्याल भी न आया था!" फिर बिना कुछ देखे भाले वे सब इकट्ठे गड़मड हो बैठ ही गये, आँखें मूँद लीं और बड़े जोर से रोने चीखने लगे। लेकिन जितना ज्यादा वो रोते उतने ही उदास वे होते जाते जितने ज्यादा रोते उनकी चीखें उतनी ही जोर की होती जातीं और रोते-रोते उनके भय भी बढ़ते जाते! और फिर जितना ज्यादा वे डरते और जोर-ज़ोर से दहाड़ते। यहाँ तक कि उन के आँसुओं का समुद्र उनकी आँखों से बह गया और एक घड़ी वह आई जब उन्हें सिवाय अपनी सिसकियों, अपने ही रोने धोने के कुछ न सुनाई दिया और वे प्रत्येक वस्तु के प्रति उदासीन हो गये और सब कुछ भूल गये। और अंत में जब वे रो-पीट रहे थे और सब कुछ भूल बैठे थे वह भयानक तूफान गुजर गया।

इस प्रकार उनका साहसिक कार्य समाप्त हो गया। लेकिन बन्दरों ने इसे बहुत बड़े गर्व की बात समझा और जब कभी इसका जिक्र आया बड़ी, शेखी के साथ कहा: "हम उस भयानक तूफान के महान युग में रहे, हम उस भयानक शिखर पर चढ़े और घोर रोदन द्वारा हमने बड़े-बड़े चमत्कार कर डाले। हम भयानक तूफान में साफ बचकर निकल आना जानते हैं!"

४१. बुराई का तुरंत खातमा

एक आदमी था जिसे यह मालूम था कि समुद्र में ज्वार आने वाला है इसलिए उसने एक छोटी-सी नाव बनाई और उसे नदी के किनारे तैयार रख दी और कहने लगा, "जब ज्वार आयेगा तो मैं इसे पानी में डुबो दूँगा और फिर समुद्र में चल दूँगा।"

कुछ ही देर बाद ज्वार उठने लगा लेकिन वह अभी था कुछ नीचा ही! "थोड़ी देर और इन्तजार करलूँ" "उसने कहा "जब ज्वार और ऊँचा हो जायगा तो मैं नाव खोल दूँगा।"

धीरे-धीरे ज्वार ऊँचा होने लगा लेकिन वह बोला, "अभी तक काफी ऊँची नहीं हुई है। ज्योंहि कुछ ऊँची हुई कि मैं अपनी नाव डुबो दूँगा।" यह कहते हुए उसने नाव कुछ और आगे बढ़ा दी।

फिर ज्वार कुछ ऊँचा और ऊँचा होता गया लेकिन वह आदमी भी किनारे से और आगे नाव सरकाता गया यहाँ तक कि वह पहाड़ी तक पहुंच गई।

और अब उसने कहा, "अब नाव खेने का समय नहीं ज्वार बहुत चढ़ चुका है।"

४२. दिल की तसल्ली

तीन आदमी मिट्टी के घड़ों, लोटों और बर्तनों के तीन ठेले पहाड़ के ढलान से ऊपर को ढकेल रहे थे।

पहाड़ी ढलान और खसवाँ ऊँचा था और रास्ता बकरी की पगडण्डी से कुछ बेहतर न था जिसके एक ओर बड़ी ऊँची ढलवाँ चट्टान थी और दूसरी ओर बहुत ही सीधी गहरी घाटी थी। बेशक वह काम था बहुत खतरनाक। इन्हीं कठि-नाइयों की बदौलत वे कुछ ही दूर गये होंगे कि उनमें से एक की गाड़ी उलट गई और उसके सारे बर्तन चूर-चूर हो गये।

दूसरी आदमी कुछ खुश किस्मत था: उसने अपना ठेला आधी दूर ही ढकेला कि वह एक चट्टान से टकराया और सारे बर्तन बिखर गये। लेकिन इस बार भी एक बर्तन साबित न बचा।

तीसरे आदमी ने अपना ठेला शिखर तक ढकेला और ले गया। वहाँ जाकर उसने खुश हो कहा: "अरे वाह वाह! मैं तो ले आया!" साथ ही उसने संतोष की सांस ली और अपनी पकड़ कुछ ढीली करदी। लेकिन उसकी गाड़ी भी एकदम उलट गई, सारे बर्तन भी नीचे गिर पड़े और जब उसने गौर से देखा तो एक बर्तन भी साबित न था।

इस प्रकार यह कहा जाना गलत नहीं कि उन तीनों के तमाम बर्तन टूट गये थे। लेकिन इससे वे जरा भी हौसला-पस्त न हुए और एक दूसरे के आगे सिर हिलाते और मुस्कराते

हुए उन्होंने फौरन अपनी सफलताओं की तुलना की। पहाड़ के शिखर पर बैठकर उन्होंने एक बहस शुरू कर दी।

"स्पष्ट ही मैं सबसे बुरा आरोही हूँ !" पहले ने कहा "लेकिन मैंने सबसे ज्यादा ताकत बचा रक्खी है और यही मेरी खूबी है।"

"मुझे तो कोई शिकायत करना ही नहीं है" दूसरे ने कहा। "मुझे तो आधे रास्ते मेहनत करनी पड़ी लेकिन आधे रास्ते तक अपना ठेला लाने में सफल रहा, मैंने कुछ नहीं खोया।"

"लेकिन मैं अकेला ही हूँ जो अपना ठेला ऊपर तक ले आया। और यही मेरी शान है !" तीसरे ने कहा।

अन्त में वे इस नतीजे पर पहुँचे : "हालांकि हमारे सबके बर्तन चूर-चूर होगये लेकिन सबमें कुछ अच्छाइयाँ भी हैं।" उन्होंने यह कहा और खुश-खुश अपने ठेले वापिस ले आये।

४३. कायर और साहसी

एक बूढ़े आदमी के तीन बेटे थे। सबसे बड़ा बेटा बहुत अच्छा मल्लाह था, हिम्मती, बहादुर इरादे का पक्का और जो फर्ज सामने हो उसे पूरा करने के लिए जोखम की परवाह न करने वाला। बाप उसे बहुत प्यार करता था। वह अपने उस बेटे पर फूला नहीं समाता था। उसे अपने घर की आन समझता था। पर एक दिन तूफान आया और समुन्दर की तुन्द लहरें उस निडर बहादुर बेटे को निगल गईं।

दूसरा बेटा एक कोयले की खान में काम करता था। वह अथक और मेहनती था। अपने साथियों से वह कहीं ज्यादा मजबूत और हिम्मती था। वह ईमानदार और सच्चा था। अपने साथियों या मित्रों की मदद करने में उसे हमेशा आनंद आता था। इसीलिए खान के सब मजदूर और खासकर नौजवान उसे बहुत चाहते थे और उसकी मित्रता की बड़ी कद्र करते थे। बाप भी उसे बहुत प्यार करता। सबसे बड़े बेटे के मरने के बाद से इस दूसरे बेटे की तरफ बाप का प्यार और बढ़ गया था। बाप के मन को उसे देखकर बड़ी शान्ति मिलती थी। उसे वह अब अपने लिए भगवान की सबसे बड़ी देन समझता था। पर थोड़े ही दिनों में अपनी बहादुरी और अपने सेवा भाव के कारण ही यह दूसरा बेटा भी चल बसा। उस दिन वह खान में काम कर रहा था कि एक खम्बा गिर गया और खान की जमीन नीचे को धँसने लगी। बड़ी बहादुरी के साथ उसने एक खम्बे को अपने ऊपर संभाले रक्खा जिससे

उसके बहुत से साथियों की जान बच गई पर वह खुद वहीं दब कर मर गया।

बूढ़े बाप का दुख अब बहुत ही बढ़ गया। एक रात भर के अन्दर वह हद से ज्यादा कमज़ोर और निढाल दिखाई देने लगा। पर अभी उसके एक बेटा और था। इसी से उसे कुछ तसल्ली थी। बूढ़े बाप के विचार अब कुछ बदले। उसने पक्का इरादा कर लिया कि—"अब मैं अपने इस सबसे छोटे बेटे को इस तरह बहादुर और निडर न बनने दूँगा। अब इस आखिरी बेटे को खो बैठने का रंज मेरी बर्दाश्त से बाहर की चीज है।"

उसने ठंडी साँस भरकर कहा—"मेरा यह बेटा कायर और निकम्मा रह जाय तो अच्छा, बजाय इसके कि उसकी बहादुरी और उसके गुनों के कारण मैं उससे भी हाथ धो बैठूँ।"

इसलिये बुड्ढे ने उस आख़री बेटे को अपने साथ रखकर खुद तालीम देना शुरू किया। उसने उसे इस तरह रखा जिस तरह शायद कोई बूढ़ी औरत अपनी छोटी सी पोती को भी न रखती हो। वह लड़का सचमुच बाप का आज्ञाकारी निकला। जैसा बाप चाहता था वैसा ही हो गया—डरपोक, स्वार्थी निकम्मा। पर एक अजीब बात यह हुई कि अब थोड़े ही दिनों बाद उस बुड्ढे बाप को इतना दुख हुआ और इतनी ग्लानि होने लगी जितनी उसे जीवन में कभी नहीं हुई थी। अपनी गलती पर वह बार-बार पछताता था। अपने

उस बेटे से उसे नफ़रत होने लगी और उसे उस पर दया आने लगी। बूढ़े ने कहा।

"इस निकम्मेपन से, इस सड़ियलपन से मुझे हमेशा चिढ़ रही है। पर अब स्वार्थ और मोह के वश में आकर मैंने खुद इस तीसरे बेटे का यह हाल कर डाला! उसके जीने से क्या फायदा, जिसे न समुन्दर डुबो सके न पहाड़ कुचल सके?"

अब बूढ़े बाप के लिये सचमुच अपने उस बेटे से प्यार करना नामुमकिन हो गया, क्योंकि उसका प्यार केवल जबर-दस्त लहरों वाले समन्दर, या ऊँचे अडिग पहाड़ और अपने दोनों बड़े बेटों जैसे साहसी आदमियों की तरफ़ ही जा सकता था। बूढ़े बाप के दिल में अब रंज और ग्लानि की कोई सीमा न रही। यह उसे आख़री दिनों के अपने ग़लत विचारों और अपने हाथों अपने सब से छोटे बेटे को बिगाड़ देने की सजा थी।

४४. साहस की उड़ान

एक जवान उक़ाब पक्षी और उसकी माँ एक साथ रहते थे। मां बहुत बूढ़ी हो गई थी। एक दिन कुछ देर तक उड़ने के बाद वह पहाड़ की एक कगर पर बैठ गई और कहने लगी—"मेरा बदन सचमुच थक गया है। अब मैं आराम करूँगी।" पर देर तक आराम करने के बाद भी उसमें फिर से ताक़त न आई। वह अब अपने को निढाल महसूस करने लगी। उसका बेटा मजबूत और जवान उक़ाब था। वह दूर से उड़ कर आया। मां का यह हाल देखकर नीचे उतरा। और माँ की देखभाल और रक्षा के लिए उसके पास रहने लगा। अब वह माँ को छोड़कर कहीं नहीं जाता। अजीब बात यह हुई कि बेटे को अपने पास देख कर माँ और भी कमजोरी महसूस करने लगी। उसने अपने बेटे से कहा—"बेटा! यह ढंग ठीक नहीं, तुम जितने प्रेम से मेरी देखभाल में लगे रहते हो उससे मुझे और भी अधिक कमजोरी और थकान मालूम होती है। अब बेटा, दूसरा ढंग आज़मा कर देखो। तुम आसमान में उड़ो और खूब ऊँचे मंडलाओ। मैं तुम्हें मंडलाते देखूँ तो मेरी हिम्मत खुले।"

इस पर उसका बेटा, वह जवान उक़ाब, खूब ऊँचे जाकर आज़ादी और बहादुरी के साथ आसमान में मंडलाने लगा। मा कुछ देर तक शौक़ के साथ उसे देखती रही। फिर किसी न किसी तरह वह उठ खड़ी हुई और खुद उड़ने लगी, और

उतने ही जोर से उड़ने लगी जितने जोर से उसका बेटा उड़ रहा था।

अगर कोई बूढ़ा आदमी चलना फिरना भूल गया हो तो सबसे आसान तरीक़ा यह है कि नौजवानों को चलते फिरते देखे। फिर उस बूढ़े के दोनों पैर अपने आप चलने लगेंगे। इसी तरह जवानों की बहादुरी के किस्से सुनना भी बूढ़ों की तन्दुरुस्ती के लिये बहुत अच्छा होता है। नौजवान आपके आस पास हों तो बुढ़ापे से क्या डर? बुढ़ापे से डर तो तब ही है जब आप नौजवानों से बचते हों, उन्हें नापसन्द करते हों और उन्हें अपने से दूर रखते हों।

४५. अत्याचार का फल

एक सांप एक दरख्त को मार डालना चाहता था। खूब सोचकर उसने एक नई और जबरदस्त चाल निकाल ली। सांप बड़ा विद्वान था। उसकी विद्या इस मामले में उसके बड़े काम आई। उसने देख रखा था कि बहुत से दरख्तों पर जब बेलें लिपट जाती हैं तो दरख्त निकम्मा होकर मर जाता है।

सांप ने सोचा—"उन बेलों से मैं कहीं अधिक मोटा और मज़बूत हूँ। इसलिये अगर मैं इस दरख्त पर चारों तरफ़ से लिपट कर उसे खूब कस लूं तो दरख्त एकदम घुट कर नहीं मरेगा तो कम से कम धीरे-धीरे सूख कर तो मर ही जायगा।"

यह सोचकर वह सांप उस दरख्त पर चढ़ा। दरख्त के तने पर चारों तरफ़ से लिपट कर उसने उसे जोरों से कस लिया। वह उसे और ज्यादा से ज्यादा कसता गया। इस उम्मीद में कि दरख्त जल्दी खतम हो जायगा। पर जब उसने दरख्त की तरफ़ देखा तो दरख्त वैसा का वैसा ही खड़ा था। सांप को क्रोध आया। उसने और अधिक जोर के साथ दरख्त को कसना शुरू किया। फिर जब उसने दरख्त को देखा तो दरख्त फिर वैसा का वैसा ही खड़ा था।

सांप को अब इतना अधिक क्रोध आया कि दरख्त को श्राप देते हुए उसने कहा—"तुम समझते हो कि तुम्हारे इस

तरह खड़े रहने से और यह समझने से कि आखिर में थक जाऊँगा तुम्हें कोई लाभ होगा ?"

सांप ने तय कर लिया कि अपनी चाल में डटे रहकर दरख्त को घोट कर मार ही देना है चाहे कितनी भी देर क्यों न लगे। उसने दरख्त को और कसा और पल भर के लिये भी कहीं ढील नहीं आने दी। अब उसे बहुत अधिक देर तक इन्तज़ार करना न पड़ा। या तो शायद आखिकार सांप ही ने थक कर यह तय कर लिया कि जो थोड़ी सी शक्ति मुझ में बाक़ी रह गई है उसे अब अपनी ही रीढ़ की हड्डी तोड़ने में खर्च कर डालूँ, और या शायद दरख्त का तना यकायक और मोटा हो गया और उसने सांप के दो टुकड़े कर दिये, जो भी हुआ हो, थोड़ी ही देर में वह सांप एक सड़ी हुई रस्सी की तरह टुकड़े-टुकड़े हो कर जमीन पर गिर पड़ा।

४६. ज़ालिम को मजा चखाया

जंगली शहद की मक्खियों का एक झुण्ड एक दरख्त के ऊपर रहने के लिये अपना छत्ता बना रहा था। दरख्त की शाखों में मक्खियां इधर से उधर से उधर से इधर तेज़ी से आ जा रही थीं। काफी शोर और जोश था। सब भिनभिना रही थीं। जंगल की शान्ति भंग हो रही थी। एक सांप जंगल का मुआइना करता हुआ वहाँ से निकला। इस शोर शर को देखकर वह बहुत बिगड़ा और कहने लगा—

"अव्वल तो इस तरह का सारा काम बड़ी मूर्खता का है। किसी बुद्धिमान नीतिज्ञ ने कहा है कि जो देश हमेशा शोर व गुल मचाते रहते हैं उनमें शान्ति नहीं रह सकती। यह या तो विदेशियों की बेजा मदाखलत और शरारत है और या देश के अन्दर घरेलू जंग है और या कम से कम चाय के प्याले में तूफान है। जो हो, बहुत ही बेवकूफी की बात है!

"दूसरी बात यह है कि बहुत से लोगों के इस तरह एक साथ मिलकर काम करने की यह आदत बड़ी गन्दी आदत है! मालूम होता है तुम्हारी सबकी गाड़ी पटरी से उतर गई है। सब शांति भंग हो गई है। शहर के सब लोग बाग़ी हो गए हैं। काई ऐसा नहीं है जो सब की नुमाइन्दगी कर सके! मैं इसे बरदास्त नहीं कर सकता।"

वह सांप खुद अपने को एक अन्तराष्ट्रीय पुलिसवाला समझता था। राजनीति के अलावा वह समझता था कि धर्म

और इंजील का प्रचार करना भी उसी का फ़र्ज है। वह फ़ौरन उस दरख्त पर चढ़ गया। उसने तय कर लिया कि सबसे पहले उस छत्ते को तोड़ दिया जाय जो शहद की मक्खियां बना रही थीं।

पर एकदम वह सांप फिर पीछे को लौटा और गिरता पड़ता, फिसलता जमीन पर आ टपका। शहद की मक्खियाँ उसके पीछे पड़ी हुई थीं। साँप को मजबूर होकर जल्दी से एक घनी कांटेदार झाड़ी में घुस जाना पड़ा।